॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

मई, 2013 **वर्ष** 16, **अंक** 5
विक्रमी सम्वत् 2070
एक प्रति का मूल्य 10/- रुपये

दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110
दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756

वार्षिक शुल्क 100 **रुपये**
ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com
कुल पृष्ठ 20

वैदिक समाज व्यवस्था

❐ स्व. पं. शिवदयाल

हिन्दू जाति में प्रचलित वर्तमान समाज-व्यवस्था को ही वैदिक समाज-व्यवस्था मानकर प्रायः लोग उस पर नाना प्रकार के आक्षेप करने लगते हैं। जन्ममूलक वर्णवाद, प्रचलित जाति-उपजातिवाद, अवर्ण सवर्णवाद, स्पृश्यास्पृश्यवाद, उच्चावचयवाद कुछ ऐसे वाद आज दिन हिन्दू समाज में प्रचलित हैं कि जिनका वैदिक समाजव्यवस्था में किन्चिन्मात्र भी सम्बन्ध नहीं, किन्तु फिर भी इनकी आड़ लेकर विरोधी लोग वेदों को कोसते हैं। कास्टलेस सोसायटी का नारा जो आज के प्रगतिशील राजनीतिक मस्तिष्क लगाते हैं और इन सब वा दो को मिलाकर एक नवसमाज के निर्माण की कल्पना का प्रचार करते हैं सो वह केवल प्रतिक्रिया के वशीभूत होकर ही ऐसा करते हैं। उनकी यह प्रतिक्रिया इन प्रचलित वादों के विरोध ही तक सीमित न रहकर वैदिक समाज व्यवस्था के विरोध में भी कार्य करती दृष्टिगोचर होती हैं। अस्तु।

अन्य देशों की भांति भारत की भी समाजव्यवस्था आज श्रेणी संग्रामवाद की कसौटी पर कसी जा रही है तथा समाज को पूंजीपति एवं श्रमिक दलों के रूप में विभाजित किया जाने लगा है। इस विभाजन का आधार भी प्रतिक्रिया ही है। इसमें यथार्थ वादता को स्थान नहीं।

वेद यथार्थवाद का स्पष्ट प्रतिपादक है। 'संगच्छध्वं' का वैदिक आदर्श लुप्त हो जाता है, यदि हम इस साम्यवादी प्रतिक्रिया को अपना लेते हैं। फिर जो पैसे वाला वह पापी और जो श्रमिक है वह पुण्यात्मा एवम् धर्मात्मा है। वेद धन को समाज के विभाजन का आधार ही नहीं मानता है। और विश्व से मानवता चाहता है- **गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिंग न च वयः।** यह उक्ति वैदिक भावना की पोषक है। वेद गुणों के आधार पर मानव समाज के दो अंगों में अर्थात् आर्य और दस्युओं में बांटना चाहता है।

आर्य सम्बन्धी वैदिक कल्पना भी धन के कारण अथवा देश विशेष में निवास करने के कारण अथवा किसी मत वा सम्प्रदाय में आस्था रखने के कारण नहीं है, अपितु श्रेष्ठ गुणों के धारण करने एवम् श्रेष्ठ कर्मों के अनुष्ठान के कारण ही मानव आर्य कहाता है।

इसी प्रकार किसी पराजित या विजित वर्ग को दस्यु मानना अथवा असंस्कृत भाषा बोलने के कारण म्लेच्छ को दस्यु कहना अथवा वनों में निवास करने वाली अरण्य जातियों को दस्यु कहना भी वेद को अभीष्ट नहीं। वेद ने दस्यु की कल्पना भी गुण कर्मों के आधार पर ही की है।

श्रेष्ठ गुण कर्मों के कारण मानव आर्य बनता है, तो निकृष्ट गुण कर्मों के हेतु वह अनार्य अर्थात् दस्यु कहलाता है।

दस्यु को भी अच्छे संस्कार एवम् शिक्षा द्वारा आर्य बनाना सदा से वेद नीति चली आयी है। **'-कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** का वैदिक घोष इसी नीति का प्रबल प्रतिपादक है। दस्युओं अर्थात् चोर, डाकू, दुराचारी, देशद्रोही, आततायी दुर्जनों को उचित दण्ड देकर उनका सुधार करना और उनकी सन्तति को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ नागरिक बनाना यह वेदाभिमानियों की सनातन पद्धति रही है।

आर्यो को चार वर्णों में अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्रों में विभाजित करना वेद का अभीष्ट है। शूद्र निश्चय आर्य है और समाज में ब्राह्मण आदि की भांति उसको सर्व अधिकार प्राप्त हैं। वेद का पढ़ना, षोडश संस्कारों का करना, शिखा-सूत्र का धारण करना चारों वर्णों के लिए विहित है। **'यथेमां वाचं कल्याणीम्'** इस मन्त्र में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवम् शूद्र, म्लेच्छ एवं अरण्यादि सभी वर्गो को वेद पढ़ने का अधिकार प्रतिपादित है। मन्त्र में क्षत्रिय के उपरान्त शूद्र शब्द पठित है। इस पंडित समाज को विशेष विचार करना चाहिए। यह वेद की व्यवस्था इस बात की सूचक है कि शूद्र को जो अन्य तीन वर्णों से हीन व छोटा माना जाता है वह भी वेद को मान्य नहीं।

शूद्र, मूर्ख, अनाड़ी, नीच आदि को कहते हैं यह धारणा ही सर्वथा अवैदिक है। मध्यकालीन जन्ममूलक वर्णवाद के मानने वाले आचार्य ऐसी भ्रान्ति फैलाने लगे थे। शूद्र का काम केवल अन्य तीन वर्णों की सेवा करना है यह भी सर्वथा अवैदिक कल्पना है। शूद्र तो श्रम एवं तप का प्रतिनिधि है। श्रम को वेद ने धर्म का पृथक एवं सर्वश्रेष्ठ अंग माना है। यथा ''श्रमेण तपसा सृष्टा'' आदि मन्त्र स्पष्ट ही है। श्रमहीन जाति का संसार में विनाश निश्चित है। श्रम की अवहेलना करने वाली जाति का भाग्य सूर्य कभी उदय नहीं हुआ करता। अतएव शूद्र की समाज में प्रतिष्ठा ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्यों

(शेष पृष्ठ 8 पर)

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

महात्मा हंसराज दिवस
पर डी.ए.वी. विश्वविद्यालय का उद्घाटन

महात्मा हंसराज जन्मदिवस इस वर्ष पंजाब स्थित जालन्धर शहर में पूरे हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। यह एक ऐतिहासिक उत्सव था। जिसमें महात्मा हंसराज के स्वप्न की पूर्ति करते हुए डी.ए.वी. विश्वविद्यालय का उद्घाटन किया गया। विशाल परिसर में चार दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन था। जिसमें आचार्य वेद वागीश जी द्वारा अज्ञान से ज्ञान की ओर विषय पर सायंकालीन प्रवचन होते रहे। तीन दिन तक चतुर्वेद शतकम यज्ञ का भी आयोजन किया गया। जिसमें दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय, हिसार के आचार्य के ब्रह्मत्व में यज्ञ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ, जिसमें विद्यालय के ब्रह्मचारी वेदपाठी के रूप में उपस्थित थे। रविवार 20 अप्रैल 2013 को यज्ञ की पूर्णाहूति के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में मुख्य यजमान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवम् डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री के प्रधान श्री पूनम सूरी जी सपत्नीक उपस्थित थे। इसी अवसर पर डी.ए.वी. के महामन्त्री श्री राधेश्याम शर्मा जी सपत्नीक यज्ञवेदी पर उपस्थित थे। इसी के साथ श्री प्रि. मोहन लाल जी, श्री प्रबोध महाजन, डॉ. सामा, उपप्रधान डी.ए.वी. भी उपस्थित थे। इसी अवसर पर पंजाब विश्वविद्यालय के उपकुलपति एवम् नवनिर्मित डी.ए.वी. विश्वविद्यालय के उपकुलपति भी उपस्थित थे। यज्ञ का आयोजन एक भव्य सुन्दर सभागार में आयोजित किया गया, जिसमें पूरे भारत के डी.ए.वी. विद्यालयों के प्रधानाचार्य एवम् आर्य समाज के प्रमुख अधिकारी उपस्थित हुए। तदुपरान्त डी.ए.वी. विश्वविद्यालय परिसर के भव्य मैदान में एक विशाल मंच पर सभा का आयोजन किया गया। जिसमें लगभग 10 हजार से ऊपर जनसमूह उपस्थित था। इस अवसर पर पंजाब एवम् जालन्धर शहर के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए। डी.ए.वी विश्वविद्यालय के

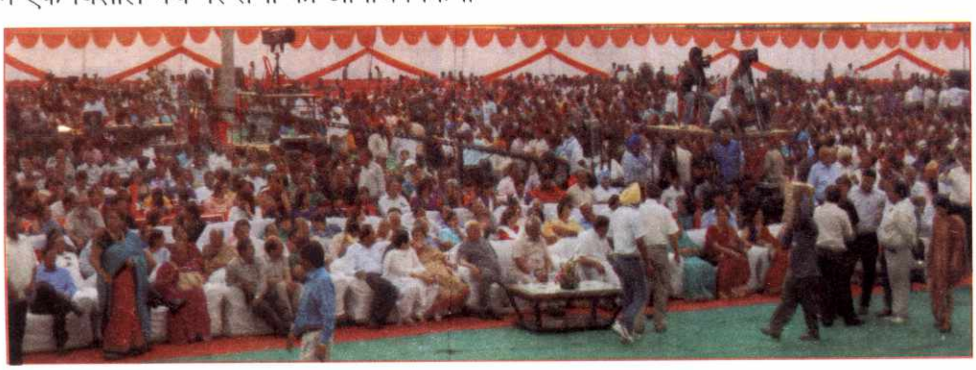

कुलाधिपति श्री पूनम सूरी जी दीप प्रज्ज्वलित कर विश्वविद्यालय का विधिवद उद्घाटन किया। तदुपरान्त महात्मा हंसराज के स्वप्न साकार हुए, नामक गीत प्रस्तुत किया गया एवम् डी.ए.वी. गान का भी लोकार्पण हुआ और इसी अवसर पर निर्देश भी दिए गए कि डी.ए.वी. गान डी.ए.वी. के सभी उत्सवों के अन्त में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान के साथ गाया जाएगा। डी.ए.वी. विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री पूनम सूरी जी ने अपने उद्बोधन को स्वामी दयानन्द जी द्वारा निर्मित प्रार्थना मन्त्रों के पहले मन्त्र से प्रारंभ किया। आप ने कहा कि मैं अपने आपको गौरवान्वित अनुभव कर रहा हूँ कि जिस लक्ष्य को महात्मा हंसराज ने हमारे सम्मुख रखा था उसे आज इस विश्वविद्यालय के रूप में मेरे द्वारा उद्घाटन किया जा रहा है। इस विश्वविद्यालय में अन्य सहयोगियों एवम् मार्गदर्शकों का सहयोग नियत है और इस समय परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि जिस वैदिक लक्ष्यों को लेकर हम इस विश्वविद्यालय को संचालित करना चाहते हैं उसमें हम सफल हों।

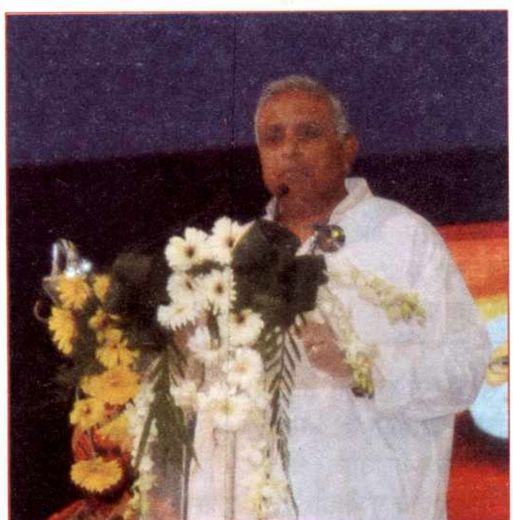

प्रधान श्री पूनम सूरी जी उद्बोधन देते हुए

इसी अवसर पर आपने आर्य समाज के राष्ट्रीय एवम् विश्वस्तरीय असंगठन पर भी चिन्ता जताई और कहा कि जिस दिन हम सभी आर्य संगठित हों जाएंगे उस दिन मैं अपना सहयोग लिए नंगे पांव चलकर उन तक जाऊंगा।

इसी अवसर पर महात्मा हंसराज जीवन के प्रेरक अवसरों पर एक भव्य नृत्य नाटिका प्रस्तुत की गई जिसमें हमारी जानकारी के अनुसार 1000 से ऊपर छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। इतने बड़े आयोजन में कहीं भी त्रुटि नहीं थी। पंजाब का अतिथि सत्कार एवम् व्यवस्थाएं देखने योग्य थी। (विस्तृत रिपोर्ट चित्रों सहित अगले अंको में)

क्या केवल स्वाध्याय करना ही धर्म है ?

लेख में इस शंका का समाधान करने का प्रयत्न किया है इसलिए पत्र के रूप में यह विचार हर उस पुत्री के लिए है जो धर्म में थोड़ी भी रूचि रखती हो ताकि उसे सत्यज्ञान हो सके।

तुमने कुछ शंकाओं का समाधान मांगा है। तुम्हारा पहला प्रश्न यह है कि क्या रामायण का पढ़ना, चौपाइयों का सुनना, गाना या सुनना और उनको कंठस्थ करना, क्या सत्यार्थ प्रकाश का पढ़ना, क्या इसी प्रकार से किसी भी धार्मिक पुस्तक का पढ़ना अपने आप में धर्म है और क्या हम इन को पढ़कर या गाकर कुछ धर्म करते हैं? और दूसरा प्रश्न यह है कि राम नाम रट कर या हरे-हरे, गोपाल-गोपाल कहते हुए धर्म के मार्ग पर अग्रसर होते हैं या नहीं? देखने में तो यह दो प्रश्न हैं परन्तु वास्तविक रूप में यह एक ही प्रश्न है। इससे पहले की इस प्रश्न का उत्तर दिया जाए हम इस बात का ध्यान करें कि हम जब ईश्वर की स्तुति करते हैं तो ईश्वर के गुणों का क्यों वर्णन करते हैं? हम कहते हैं कि ईश्वर दयालु है, कृपालु है, न्यायकारी है, सत्यचित् आनन्द है, तेरी लीला अपरम्पार है, तू यह है, तू वह है इत्यादि। क्या परमात्मा अपनी तारीफ का भूखा है? क्या ईश्वर अल्पज्ञ है और उसे अपने गुणों का ज्ञान नहीं और हमने ईश्वर को उसके गुणों से अवगत कराना है। नहीं यह बात नहीं है। तो फिर हम ऐसा क्यों करते हैं? हम ऐसा इसलिए करते हैं कि एक चोर का मित्र चोर होगा। यदि किसी चोर की किसी साधु से दोस्ती हो जाएगी तो थोड़े दिनों के बाद साथ छूट जाएगा जब दोनों को एक दूसरे की वास्तविकता का पता चल जाएगा तो वह एक दूसरे से दूर हो जाएँगे। परन्तु एक चोर की चोर से मित्रता पक्की हो जाएगी। एक साधु की साधु से मित्रता पक्की हो जाएगी। मदिरा पीने वाले आपस में एक मण्डली बना कर बैठ जाएंगे और न पीने वाले एक ओर। मांसाहारी पार्टी एक ओर जुट जाती है और शाकाहारी दूसरी ओर। Birds of a feather flock together एक विचार वाले व्यक्ति हमेशा इकट्ठे रह सके हैं और यदि विचारों में मतभेद होगा तो मनों में मतभेद आ जाएगा और मित्रता टूट जाएगी। बिल्कुल ही घनिष्ठता नहीं रहेगी। मनुष्य की ईश्वर से तभी मित्रता हो सकती है यदि उसमें वह गुण आ जाएं जो ईश्वर में हैं और ईश्वर भी उसी व्यक्ति से मित्रता रखेगा जिसमें ईश्वरीय गुण हों जो व्यक्ति न्यायकारी नहीं, ईश्वर उसे अपने निकट नहीं आने देगा। जो व्यक्ति सत्य नहीं बोलता ईश्वर का मित्र नहीं हो सकता। हम इसलिए ईश्वर के गुणों को याद करते हैं ताकि उसके गुणों को जानकर उन गुणों को अपने अन्दर धारण करने का यत्न करें ताकि हमारी ईश्वर के साथ सहृदयता हो जाए। हमारे गुण एक जैसे हो जाएं। ताकि हमारी ईश्वर से मित्रता पक्की हो जाए। इस कारण हम लोग प्रार्थना से पहले ईश्वर स्तुति करके उसके गुणों का गान करते हैं।

अब आओ फिर अपने प्रश्नों की ओर चलें। क्या रामायण की चौपाई केवल पढ़ने से या कण्ठस्थ करने से या सुनाने से हमने कोई धर्म किया, रामायण में भगवान् राम के गुणों का वर्णन है। उनके गुणों का जानना अत्यावश्यक है। भगवान् राम के जीवन की झांकी को जाने बिना केवल राम-राम रट कर हम कैसे जान सकते हैं कि राम कौन थे, उनका क्या चरित्र था? उन्होंने क्या किया और क्या नहीं किया? रामायण का पढ़ना, राम नाम का जप करना अपने आप में कोई धर्म नहीं। रामायण को पढ़कर उस मर्यादा पुरुषोत्तम के जीवन को समझ कर उसकी एक-एक बात पर अनुसरण करना धर्म है। जो व्यक्ति रामायण पढ़ने के पश्चात् यह धारण कर लेता है कि मैंने माता-पिता की आज्ञा का पालन करना है। वास्तविक रामायण तो वह जानता है। चौपाई बोलने वाला व्यक्ति नहीं। जो स्त्री यह कहती है कि चाहे वनवास हो मैं तो अपने पति के साथ रहूँगी। रामायण तो उस स्त्री ने जानी है। रामायण केवल पढ़ने की पुस्तक नहीं अपितु मनन कर, चिन्तन कर धारण करने वाला ग्रन्थ है। राम-राम जपने से कुछ न होगा। राम के चरित्र पर अनुसरण करने से जीवन लाभ होगा। सत्यार्थ प्रकाश में जो स्वामी दयानन्द जी ने इस संसार में आकर कैसे समय व्यतीत करना है? धर्म क्या है, सत्य असत्य क्या है? आदि विषयों पर प्रकाश डाला है। इन विषयों को पढ़ कर आप एक उपदेशक तो बन सकते हैं, एक दार्शनिक तो बन सकते हैं, एक अच्छे वक्ता बन सकते हैं परन्तु यदि आपने अपने जीवन को संवारना है, सुपथ की ओर जाना है तो इन पर लिखी बातों को अपने जीवन में धारण करना होगा। केवल इनको पढ़ना या नाम का जाप करना आपको कहीं भी नहीं ले जाएगा। एक डाक्टरी पुस्तक पढ़कर आप एक अच्छे, सुयोग्य डाक्टर तो बन सकते हैं और यदि एक डाक्टर ऐसी किताब को पढ़ेगा तो और भी अच्छा डाक्टर बन जाएगा परन्तु यदि आप उन किताबों को बार-बार पढ़ते जाएं, लाखों बार पढ़ते जाएं तो भी आपका रोग कम नहीं होगा। रोग निवारण के लिए तो उस पुस्तक में लिखी दवाई का प्रयोग करना पड़ेगा। तब एक दिन ऐसा आएगा जब आपका रोग ठीक हो जाएगा। रामायण का पाठ आपको वक्ता तो बना सकता है परन्तु आपके जीवन को सुधार नहीं सकता। सुधार के लिए तो रामायण में जो कुछ लिखा है, सत्यार्थ प्रकाश में जो कुछ लिखा है, उस पर अमल करने से होगा। परन्तु यह अवश्य देखना होगा कि जो कुछ तुम सीख रहे हो क्या वह वेदानुकूल है? वह वेद विरुद्ध तो नहीं? वेदानुकूल को गले लगाना होगा और वेद विरुद्ध का त्याग करना होगा। केवल तब ही धर्म के मार्ग पर अग्रसर हुआ जा सकता है।

अजय टंकारावाला

(डॉ. आनन्द अभिलाषी जी की पुस्तक से प्रेरित)

टंकारा समाचार **के प्रसार में सहयोग दें**

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं।

ऋषि जन्मभूमि की ऋषि भक्तों से अपील

मान्यवर

सादर नमस्ते।

आशा है कि आप स्वस्थ एवं कुशल होंगे। मैं हर समय आपके स्वास्थ्य लाभ, दीर्घायु एवं आपका परिवार फले फूले परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ।

टंकारा स्थित ऋषि जन्म गृह जहां बाजार से तंग गली से होकर ऋषि भक्तों को जन्म गृह तक पहुंचना होता है। आए हुए कई गणमान्य व्यक्तियों ने आगन्तुक पुस्तिका में इस विषय की ओर ध्यान आकर्षित किया है कि जन्म स्थान का मुख्य द्वार एक भव्यता लिए होना चाहिए। इस विषय में जानकारी प्राप्त की तो मुख्य द्वार को चौडा करने के लिए बाजार में से एक दुकान और दुकान के पीछे का एक मकान जिसमें कोई व्यक्ति नहीं रहता, को ट्रस्ट द्वारा खरीदना होगा।

इस वर्ष टंकारा की वार्षिक बैठक में इन्हें दान स्वरूप राशि प्राप्त कर क्रय करने का निश्चय किया गया और इस संदर्भ में श्री हंसमुख परमार को उपरोक्त मकान मालिकों से बातचीत करने हेतु अधिकृत किया गया। उनके अनुसार 14,51,000/- रूपये में गली के नुक्कड़ पर सबसे प्रथम दुकान प्राप्त हो रही है, हम 2,00,000/- अग्रिम दे उसे पक्का कर रहे हैं।

आपकी ऋषिभूमि के प्रति अपार श्रद्धा है इस कारण आपसे करबद्ध निवेदन है कि आप अपनी ओर से अपनी संस्था की ओर से एवं अन्य ऋषि भक्तों से इस मद में अधिक से अधिक धनराशि एकत्र करवाने की कृपा करेंगे। आप यह धनराशि **चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा ''श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'' के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा टंकारा के पते पर भिजवा सकते हैं।**

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर की धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

-:निवेदक:-

सत्यानन्द मुंजाल	**शिवराजवती आर्य**	**रामनाथ सहगल**	**योगेश मुंजाल**
प्रधान	उपप्रधान	मन्त्री	संयोजक

ऋषि जन्म गृह विस्तार समन्वय समिति

क्षमा के महादानी स्वामी दयानन्द

❒ खुशहाल चन्द्र आर्य

विश्व में ऐसे अनेकों महापुरुष हुए हैं जिन्होंने अपने मारने वाले को क्षमा कर दिया। किसी ने भारी नुकसान करने पर क्षमा कर दिया। किसी ने चोट मारने वाले को क्षमा कर दिया, पर स्वामी दयानन्द की क्षमा, इन सभी क्षमा करने वालों से एक अलग ही स्थान या कीमत रखती है। उनकी दानशीलता सर्वोपरि है। वैसे तो महर्षि ने अपने जीवन में एक नहीं दो नहीं, दस नहीं अनेक स्थानों पर अपनी दानशीलता का परिचय दिया है। यहाँ हम केवल चार-पांच ही उदाहरण प्रस्तुत करते हैं, जो भली भाँति हैं।

1. राव कर्णसिंह को क्षमा किया: मिली ज्येष बदी 13सं. 1925 तदनुसार सन् 1868 में स्वामी जी कर्णवास में अपनी पुरातन कुटिया में ही आकर ठहरे। उसी समय गङ्गा स्नान का मेला था। सहस्त्रों नर-नारी एकत्रित हुए थे। उसी समय राव कर्ण सिंह भी स्नानार्थ आए हुए थे। जब उसने सुना कि स्वामी दयानन्द यहां आए हुए हैं और वे हमारे अवतारों की और गङ्गा की निन्दा करते हैं तो वह अपने नौकरों सहित स्वामी जी की कुटिया में आ गये। यह सायं का समय था, स्वामी जी उपदेश कर रहे थे। श्रोतागण एकाग्रचित उपदेशामृत-पान करने में निमग्न थे। इसी समय कर्ण सिंह ने आकर स्वामी जी से कहा कि मैंने सुना है कि तुम अवतारों की और गङ्गा की निन्दा करते हो। स्मरण रखो। यदि मेरे सामने निन्दा की तो मैं बुरी तरह पेश आऊंगा। स्वामी जी ने कहा, मैं निन्दा नहीं करता हूँ किन्तु जो वस्तु जैसी है उसे वैसी ही कहता हूँ। तब राव बोला'' गङ्गा गगेति'' इत्यादि श्लोकों के नाम, कीर्तन, दर्शन, स्पर्शन से पाप का नाश होता है। स्वामी जी ने कहा-ये श्लोक साधारण लोगों के कपोल कल्पित हैं। सब गप्प हैं। पाप का नाश और मोक्ष-प्राप्ति वेदानुकूल आचरण से होगी, अन्यथा नहीं। यह सुनकर उसने स्वामी जी पर कुवचन-वर्षा की झड़ी सी लगा दी और आपे से बाहर हो गये और स्वामी जी के ऊपर तलवार का वार करने के लिए आगे बढ़े। वे तलवार चलाना ही चाहते थे, स्वामी ने झपट कर उसके हाथ से तलवार छीन ली और भूमि पर टेककर दबाव देकर तलवार के दो टुकड़े कर डाले। स्वामी जी ने कहा कि मैं सन्यासी हूँ, तुम्हारे किसी भी अत्याचार से चिढ़ कर तुम्हारा अनिष्ट चिन्तन नहीं करूंगा। जाओ, ईश्वर तुम्हें स्मृति प्रदान करे। स्वामी जी ने तलवार के दोनों खण्ड दूर फेंक कर, राव महाशय को विदा कर दिया।

2. एक पहलवान को सबक सिखाया: यह सन् 1867 की सोरों की घटना है। स्वामी जी एक दिन उपदेश दे रहे थे। बीसियों मनुष्य दत्त-चित्त होकर श्रवण कर रहे थे। उसी समय वहाँ एक हट्टा-कट्टा, दण्डपेल पहलवान आ गया। एक मोटा सोटा कन्धे पर रखे सभा सरोवर को चीरता-फाड़ता सीधा स्वामी जी की ओर बढ़ा। उसका चेहरा मारे, क्रोध के तमतमा रहा था। आँखे रक्त वर्ण थीं, भौवें तन रही थीं और माथे पर त्योरी पड़ी हुई थीं।' होठों को चबाता और दांतों को पीसता हुआ वह बोला- ''अरे, साधु, तू ठाकुर पूजा का खण्डन करता है और श्री गंगा मैया की निन्दा करता है, देवताओं के विरुद्ध बोलता है। झटपट बता, तेरे किस अंग पर यह सोटा मारकर तेरी समाप्ति कर दूँ?'' ये वचन सुनकर, एक बार तो सारी सभा विचलित हो गई। परन्तु श्री स्वामी जी की गम्भीरता में रत्तीभर भी न्यूनता न आई। उन्होंने प्रशांत भाव से मुस्कराते हुए कहा कि ''भद्र। यदि तेरे विचार में मेरा धर्म-प्रचार करना कोई अपराधा है तो इस अपराधा का प्रेरक मेरा मस्तिष्क ही है। यही मुझे खण्डन की बातें सुझाता है, सो यदि तू अपराधी को दण्ड देना चाहता है तो मेरे सिर पर सोटा मार, इसी को दण्डित कर।'' इन वाक्यों के साथ ही, स्वामी जी ने अपने नेत्रों की ज्योति उसकी आंखों में डालकर उसे देखा। जैसे, बिजली कौंध कर रह जाती है, धधकता हुआ अंगारा जल धारा-पात से शान्त हो जाता है, वैसे ही तत्काल वह बलिष्ठ व्यक्ति ठण्डा हो गया, श्री चरणों में गिर पड़ा, अनवरित अश्रु मोचन करता हुआ अपना अपराध क्षमा करे की याचना करने लगा। स्वामी जी ने उसे आश्वासन दिया और कहा, ''तुमने कोई अपराध तो किया ही नहीं। मुझे मारते तो कोई बात थी, अब यों ही क्यों रो रहे हो? जाओ ईश्वर तुम्हें सत्यमार्ग प्रदान करे।''

3. बच्चों को लड्डू खिलाए: स्वामी जी लाहौर से मितीआषाद बदी 9 सं. 1934 तद्नुसार सन् 1877 में अमृतसर पहुँचे। यहां वे मियां मुहम्मद खां की कोठी में ठहरे। उनके पधारने से अमृतसर के वासियों में धर्म प्रेम उमड़ पड़ा। शत्-शत् और सहस्त्र-सहस्त्र पुरुष श्री दर्शनों को आने लगे/स्वामी जी ने लोगों के उत्साह को देखकर उसी दिन सायंकाल, व्याख्यान देनाआरम्भ कर दिया। श्री के उपदेशों को सब नर नारी श्रद्धापूर्वक सुनते थे यहां स्वामी जी ने प्रतिमा पूजन, अवतारवाद और मृतक श्राद्ध आदि मिथ्यामूलक मन्तव्यों का घोर खण्डन किया जिसमें पण्डितों में हलचल मच गई। वहीं एक पाठशाला के अधयापक पण्डित ने अपने छोटे-छोटे बच्चों से कहा 'आज कथा में हम सब चलेंगे। तुम अपनी अपनी झोलियों में ईटों के रोड़े भर लो। वहां जिस समय मैं संकेत करुं, तुम तत्काल, कथा कहने वाले पर इन्हें फेंकने लग जाना। इसके बदले में कल तुमको लड्डू दिये जायेंगे।

वे अबोध बालक अपने अधयापक के बहकाने में आ गये, और झोलियों में ईटों के टुकड़े लिये व्याख्यान स्थल पर आ पहुंचे। व्याख्यान रात के आठ बजे समाप्त हुआ करता था। थोड़ा साअन्धेरा होते ही, अधयापक का संकेत पाकर वे अनजान लड़के स्वामी जी पर कंकड़ बरसाने लगे। एक बार तो सारी सभा चलायमान हो गई, परन्तु स्वामी जी ने सभा को शान्त कर दिया। पुलिस के कर्मचारियों ने, अपने चातुर्य से उन उपद्रवी बालकों में से कुछ एक को पकड़ लिया और व्याख्यान की समाप्ति पर स्वामी जी के सामने उपस्थित किया। पुलिस के पंजे में पड़े हुए वे बालक चिल्लाते और फूट-फूटकर रोते थे। स्वामी जी ने उनको ढाँढस बन्धाया और ईट मारने का कारण पूछा। तब वे हिचकियाँ लेते हुए बोले, ''हमको अधयापक जी ने लड्डुओं का लोभ देकर ऐसा करने को कहा था। स्वामी जी ने करूणा भाव से तत्काल वहां मोदक मंगवाए और उन बालकों में बांटकर कहा, ''तुम्हारा अध्यापक तो सम्भव है तुम्हें लड्डू न भी देवे, इसलिए मैं ही दिये देता हूँ।'' फिर स्वामी जी ने उनका ना-समझ बच्चों को छुड़ा दिया।

मैंने महाराज रणजीत सिंह की जीवनी में पढ़ा था कि एक बच्चे ने आम के पेड़ से आम तोड़ने के लिए पत्थर फेंका। संयोग वश वह पत्थर आम के न लगकर महाराजा रणजीत सिंह कहीं जाकर आ रहे थे, उनके माथे पर जा लगा। बच्चा भय के मारे रोने लगा परन्तु महाराजा ने कहा, ''बच्चा रोओ मत,

इसमें तुम्हारा क्या दोष है। तुमने तो आम तोड़ने के लिए पत्थर आम के पेड़ पर मारा था, पर वह पत्थर वहां न लग कर मेरे माथे में लग गया। कोई बात नहीं, इस प्रकार कह कर बच्चे का रोना बन्द करवाया। इस घटना से महाराज रणजीत सिंह की बड़ी उदारता प्रकट होती है। वे क्षमा के दानी थे, पर स्वामी जी ने बच्चों का रोना तो बन्द करवाया ही, ऊपर से लड्डू भी दिये, इसलिए स्वामी जी क्षमा के महादानी हुए।

4. जगन्नाथ हत्यारे को जीवन दान दिया- यह घटना तो सर्वविदित है कि स्वामी जी उदयपुर से शाहपुरा, अजमेर से पाली होते हुए मिली ज्येष्ठ बदी 8 संख्या 2040 तदनुसर सन् 1883 को जोधापुर पहुँचे। यहाँ स्वामी जी का महाराजा यशवन्त सिंह ने भव्य स्वागत् किया। कुछ दिनों बाद की घटना है कि महाराज के पास स्वामी दयानन्द जी ने नन्ही जान वैश्या को बैठा देख लिया। स्वामी जी ने कहा ''केसरी की कन्दरा में, ऐसी कल्मष कलुषित कुक्कुरी के आगमन का क्या काम?'' यह सुनकर नन्ही जान आग बबूला हो गई और स्वामी जी को मारने का षड्यन्त्र रचने लगी। उसने जगन्नाथ रसोइया जो स्वामी जी को खिलाता-पिलाता था, उसको पटाने का निश्चय किया। जगन्नाथ को कुछ लोभ देकर अपने वश में करके उसे दूध में जहर के साथ काँच पीस कर स्वामी जी को पिलाने के लिए कहा। जगन्नाथ वैसे तो स्वामी जी का अच्छा भक्त था, पर लोभ में आकर वह इस दुष्कर्म को करने के लिए तैयार हो गया। स्वामी जी को गहरी नींद आ रही थी इसलिए बिना कुछ विचारे उन्होंने दूध तो जगन्नाथ के हाथ से लेकर पी लिया परन्तु तुरन्त ही उन्हें ज्ञात हो गया कि दूध में जहर मिलाया हुआ था। स्वामी जी ने सेवकों से जगन्नाथ को बुलाया और कहा ''हे, जगन्नाथ! तूने यह क्या किया?'' स्वामी जी के भाव देखकर जगन्नाथ समझ गया, उसने अपनी गलती तो स्वीकार कर ली, पर उसने स्वामी जी जैसे महान् परोपकारी, उदार, सहृदय, प्रकाण्ड वेदों का विद्वान, बाल ब्रह्मचारी के प्राण लेकर मानव-मात्र को जो कलुषित किया है, इस जुल्म के लिए वह सदा के लिए कलंकित बना रहेगा। फिर स्वामी जी ने उसे 500/- रूपये देकर कहा ''ऐ जगन्नाथ! तुमने काम तो बहुत बुरा किया, मुझे अभी बहुत काम करना बाकी था, पर जो हुआ सो अच्छा ही हुआ, ईश्वर को यही मंजूर था, इसमें तुम्हारा क्या दोष है। पर अब तुम जोधपुर की सीमा से रातों-रात निकल कर नेपाल चले जाओ, नहीं तो महाराज, तुम्हें मारे बिना नहीं छोड़ेगा। इस प्रकार स्वामी जी, जगन्नाथ के प्राण बचा कर संसार में एक अद्भुत उदाहरण पेश करके, क्षमा के दानी ही नहीं, महादानी कहलाये।

-गोविन्दराम आर्य अण्डसन्त, 180, एम.जी. रोड, द्वितीय फ्लोर, कोलकत्ता-700007, फोन 22183825, 26758903

गौ-दान : महा-दान

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय लिया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

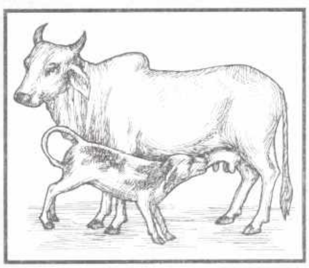

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से 15000/- रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर 5000/-रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

लाहौर की कुछ पुरानी यादें

❒ विश्वनाथ

नगरकीर्तन और प्रभात-फेरी- लाहौर की दो प्रमुख आर्य समाजें थी। आर्यसमाज, अनारकली जो आर्य प्रादेशिक सभा की प्रमुख आर्यसमाज थी और जिसके प्रेरक महात्मा हंसराजजी और कर्त्ताधर्ता लाला खुशहालचंदजी (महात्मा आनंदस्वामी)। दूसरी आर्यसमाज थी वच्छोवाली आर्यसमाज, जो शहर के अंदर, शाहआलमी बाजार पार करने के बाद एक गली में स्थित थी। यह आर्यसमाज, आर्य प्रतिनिधि सभा की शीर्षस्थ आर्यसमाज थी, जिसके कर्त्ताधर्ता महाशय कृष्ण थे। इन दोनों आर्य समाजों की धाक सारे पंजाब में थी। मैं 1935 से 1945 के दशक की बात कर रहा हूँ जिसे आर्यसमाज का 'स्वर्णयुग' भी कह सकते हैं। यह सुखद संयोग था कि पंजाब के हिन्दुओं का प्रतिनिधित्व, दो दैनिक पत्र करते थे। एक था, 'दैनिक मिलाप' और दूसरा 'दैनिक प्रताप'। दोनों के संचालक तथा संपादक पक्के आर्यसमाजी थे। 'प्रताप' के महाशय कृष्ण और 'मिलाप' के लाला खुशहाल चंद। इन दोनों पत्रों का प्रभाव पंजाब के नगरों और गांव-गांव तक था। इन्हीं समाचार-पत्रों के माध्यम से आर्यसमाज का डंका सारे पंजाब में बज रहा था।

इन दोनों आर्य समाजों का वार्षिकोत्सव प्रत्येक वर्ष नवम्बर के अंतिम सप्ताह में ही होते थे। शनिवार और रविवार को वार्षिकोत्सव के कार्यक्रम और एक दिन पहले शुत्त्वार की शाम को नगरकीर्तन, जिसे आजकल शोभायात्रा कहते हैं। दोनों ही प्रमुख समाजों के वार्षिकोत्सव एक मास के इन्हीं तीन दिनों में होते थे, इसलिए पंजाब के दूर-दूर नगरों से आने वाले उत्साही आर्यसमाज नवम्बर के इस अंतिम सप्ताह की प्रतीक्षा किया करते थे। वे परिवारों के साथ आते थे, पूरी श्रद्धा और उत्साह के साथ।

पहले मैं अपने विद्यार्थी जीवन की कुछ बातें कहना चाहूंगा। जिन दिनों मैं डी.ए.वी. मिडल स्कूल में पढ़ता था, पूरे मोहनलाल रोड पर जहाँ यह स्कूल स्थित था और जहाँ सड़कों के दोनों और स्कूली पुस्तकों की प्रसिद्ध दुकानें थी। नवम्बर मास के शुरू होते ही इस सड़क पर थोड़े-थोड़े अंतर पर कपड़े के बोर्ड लग जाते थे जो सड़क के आर-पार बंधे रहते थे, जिन पर वार्षिकोत्सव की सूचना दी जाती थी। हम विद्यार्थियों के लिए इन बोर्डों का लगना और उनका हवा में फहराना एक तरह से उत्सव के समान होता था। साथ ही, मिडल स्कूल में जहाँ आर्यसमाज (अनारकली) के उत्सव के पंडाल लगते थे और अनेक आर्यसमाजी पुस्तकों की दुकानें भी, इसी स्कूल के विशाल ग्राउंड में उत्सव से कुछ दिन पहले ही सफाई का अभियान चलता था। स्कूल के विशाल ग्राउंड में सूखी घास फैला दी जाती थी। ऊपर दरियां बिछती थीं और चारों तरफ स्कूल की दीवार के साथ अंदर की ओर दर्शकों के बैठने के लिए भारी लकड़ी के ग्रेडिड स्टेप्स लगाए जाते थे, जैसे कि प्रायः सर्कसों और बड़े खेल के मैदानों में लगे होते हैं। इन पर बैठकर दर्शक दूर से ही सारी कार्यवाही सुविधा से देख सकते थे। स्कूल के छात्र इस सारी सजावट का खूब आनंद लेते थे।

अब आइए नगरकीर्तन की बात करें। आज के दिन कल्पना भी नहीं कर सकते कि डी.ए.वी. हाईस्कूल और कॉलेज के विद्यार्थियों के लिए यह अनुशासनात्मक आदेश होता था कि वे नगकीर्तन के लिए गुलाबी रंग की पगड़ियां पहनकर आएं और ठीक चार बजे उपस्थित हों। वहाँ उनकी बाकायदा हाजिरी लगाई जाती थी। अनुपस्थित विद्यार्थियों पर जुर्माना भी होता है। सारे विद्यार्थी फॉर्मेषन में पंक्तियां बनाकर चलते थे और उनके साथ अध्यापक और प्रोफेसर भी। हाथों में 'ओ३म' की ध्वजा होती थी और आगे चलने वाले छात्रों के हाथ में आर-पर फैले हुए कपड़े के बोर्ड, जिन पर वार्षिकोत्सव की सूचना होती थी। यह नगरकीर्तन लगभग एक मील लम्बा होता था और इसमें विद्यार्थियों के अतिरिक्त आर्यसमाज के प्रसिद्ध संन्यासी, महात्मा, उपदेशक और लोकप्रिय भजनीक भी चलते थे। जैसे, आजकल रिपब्लिक-डे की परेड होती है, कुछ उसी तरह से बैलगाड़ियों पर, तख्तपोश लगाकर, दरी और चादर बिछाकर, उस पर उपदेशक अथवा भजनीक बैठते थे और थोड़े-थोड़े अंतर पर बैलगाड़ी रूक जाती थी और उपदेशक अथवा भजनीक का कार्यक्रम शुरु हो जाता था। उस समय के उपदेशक और भजनीक जनता की नब्ज पहचानते थे और उन्हें भीड़ को बांध रखने की कला आती थी। बैलगाड़ी के चारों और लोग इकट्ठे हो जाते थे और कार्यक्रम का आनन्द लेते थे। इतने में विसल बजती थी और सभी बैलगाड़ियां दस मिनट बाद मानों अगले स्टेशन पर, खड़ी हो जाती थीं और फिर वही कार्यक्रम। यह नगरकीर्तन डी.ए.वी. कॉलेज से शुरू होकर नगर के बाज़ारों और गलियों से होता हुआ विशेषकर, लाहौर के प्रमुख बाज़ार अनारकली में अपना संदेश चारों और देते हुए शहर के अंतिम कोने में समाप्त होता था। लाहौर एक कॉम्पैक्ट शहर था। उन दिनों शहर के अंदर न मोटर चलती थी और न ही टांगे। शहर के बाहर की सड़कों पर जहां नये युग के धनी-मानी रहते थे, वहाँ टांगे और मोटरें नजर आती थीं, वह भी बहुत कम संख्या में। इस नगरकीर्तन में पंजाब के प्रत्येक प्रमुख नगर से आए हुए आर्यसमाजों की टोलियां अपने-अपनी झण्डे लहराती हुई, और अपने नगर की पहचान देते हुए पैदल चलती थीं। कई उत्साही आर्यसमाजी गले में ढोलकियां लटका कर चलते थे और ढोलकी बजाकर गाने गाते थे। इस नगरकीर्तन में पंजाब के प्रायः सभी प्रमुख नगरों के दर्शन हो जाते थे, उनके पहरावे और गाने के ढंग से। जैसे, फ्रंटियर प्रदेश-रावलपिंडी, डेरा इस्माइल खां, डेरा गाज़ी खां, कोहाट, कोयटा आदि से जो आर्यसमाजें आती थी, उन्होंने कुल्ले और रेश्मी पगड़ियां पहनी होती थी। मिंटगुमरी, मुल्तान से जो आते थे, उन्होंने सलवारें और रंग-बिरंगी की कमीजें। इसी प्रकार अन्य शहरों के पहरावे देखने और बोलियां सुनने को मिलती थी। उन दिनों नगरकीर्तन में जो भजन गाए जाते थे, वे इस प्रकार थे। **'हम दयानन्द के सैनिक हैं, दुनिया में धूम मचा देंगे, दयानन्द के वीर सैनिक बनेंगे, दयानन्द का काम पूरा करेंगे, वेदो वाल्या ऋषिया तेरे आवन दी लोड़, जग विच धुम्मा पइयां दयानन्द तेरियां**, अथवा **सिर जावे तो जावे, मेरा वैदिक धर्म न जावे।**

यही गीत विद्यार्थियों में भी बांट दिये जाते थे, वे भी समवेत स्वरों में इन गीतों को गाते हुए सारे शहर की परिक्रमा करते थे। इस नगरकीर्तन से मानों सारा शहर आनंदित हो उठता था और एक नया उत्साह जाग उठता था कि वार्षिकोत्सव में अवश्य जाएंगे। शायद इसी कारण वार्षिकोत्सव में इतनी अधिक भीड़ भी होती थी। शुक्रवार की रात को आर्यसमाज के स्टार संगीतज्ञ जैसे, कुंवर सुखलाल, आर्य मुसाफिर, देसराज, संतरामजी की भजनमंडली, चिमटा भजनमंडली तथा अन्य संगीत कार्यक्रम देते थे। ये कार्यक्रम रात के ग्यारह बजे तक चलते थे और इसमें इतनी भीड़ उमड़ती थी जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती थी।

वार्षिकोत्सव से एक सप्ताह पहले नगर में प्रभात-फेरी लगती थी अर्थात् लाहौर की विभिन्न आर्यसमाजों के आर्यसमाजी पुरुष और स्त्रियां सुबह छह बजे से आठ बजे तक अपने आसपास के गली-मोहल्ले में भजन गाते थे और उत्सव की सूचना भी देते थे। आज ये सब बातें लुप्त हो गयी हैं। इन्हीं उत्सवों में मैंने महात्मा हंसराज जी, प्रिंसिपल दीवानचंद (कानपुर वाले), आचार्य ऋषिराम, आचार्य विश्वबन्धुं, आचार्य रामदेव, पं. भगवत दत्त, स्वामी स्वतंत्रानन्दजी, स्वामी सर्वदानन्दजी, स्वामी वेदानन्दजी, पं बुद्धदेवजी विद्यालंकार, पं. बुद्धदेव (मीरपुरी), ठाकुर अमर सिंह आदि विद्वानों के प्रवचन सुनने और दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

वार्षिकोत्सव के दिनों में उत्सव के प्रांगण में ही पुस्तकों की एक तरह से नुमाइश-सी लग जाती थी, जहाँ आर्य सामाजिक साहित्य और विद्वानों की नई से नई पुस्तकें लोग बड़े चाव से खरीदते थे। आर्य परिवारों में आर्यसमाज का संस्कार इन्हीं उत्सवों के कारण भी बढ़ा था। प्रायः सारे दिन का ही कार्यक्रम बनाकर परिवार आते थे। वहीं ऋषि-लंगर में भोजन करते थे। बाहर से आने वाले अतिथियों को भी बहुत सुविधा रहती थी, उनके खाने-पीने, ठहरने की उत्तम व्यवस्था रहती थी। दोनों समाजों के उत्सवों के स्थानों में अंतर भी लगभग दो-तीन फलांग का ही था। सारा समय दोनों स्थानों को जोड़ने वाली सड़क पर दर्शकों का तांता लगा रहता था।

था तो ये वार्षिकोत्सव दो ही दिन का और नगरकीर्तन केवल दोपहर बाद आधे दिन का, परन्तु इसकी धूम और इसका व्यापक असर तो कई महीने चलता रहता था। अंग्रेजी का एक शब्द है, 'वाइब्रेशन' अर्थात् इस वार्षिकोत्सव की गूँज बहुत दिनों तक सुनाई देती थी। वह आर्यसमाज का 'स्वर्णयुग' था। वे दिन हवा हो गये, अब तो स्मृतियां ही शेष हैं।

- उपप्रधान डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी

(पृष्ठ 1 का शेष)

के समान करना हमारा कर्तव्य है।

ब्राह्मण अपनी इच्छा से निर्धनता को वरण करता है। तप त्याग उसके आधार स्तम्भ हैं। वेद का अध्ययन प्रचार और विस्तार उसके जीवन के परम साधन हैं। **''विप्राणां भूषणं वेदः''** चाणक्य के इस सूत्र के अनुसार वेद का ज्ञान ब्राह्मण का परम भूषण है। आचार्य विदुर ब्राह्मण को वेदबन्धु की सुन्दर उपाधि करना अपना परम धर्म समझता था।

क्षत्रिय अन्याय, अनीति, अत्याचार को कुचलने व मिटा देने के लिए प्रतिक्षण प्रयत्नशील रहता है। निर्धन अनाथों की सेवा, रक्षा व उन्नति में सदा तत्पर रहता है। दुष्ट, दुराचारी का दमन करना उसका परम धर्म होता है। देश की शत्रुओं से रक्षा उसका पावन कर्त्तव्य होता है। नाना अस्त्र शस्त्रों का संचालन उसका नित्य का अभ्यास रहता है।

वैश्य कृषि, गोपालन, वाणिज्य की उन्नति के लिए अपने जीवन को खपाता है। समाज की सब भोजन, वस्त्र, आच्छादन, निवास आदि की आवश्यकताओं की पूर्ति करना वैश्य का परम धर्म है। शूद्र नाना प्रकार की कलाकौशल, शिल्पों की रक्षा एवं उन्नति करता है। श्रम एवं सेवा के कार्यो, को दौड़ दौड़कर करने में शूद्र को आनन्द आता है। समाज की अशुचिता को दूर करना भी उसका एक लक्ष्य होता है।

इस वैदिक वर्णव्यवस्था का यथार्थ व्यवहार इस युग में एक बार पुनः होने लगे तो संसार निश्चय ही स्वर्ग अर्थात् सुख का धाम बन जाये। यह वैदिक वर्ण व्यवस्था काल्पनिक नहीं व्यावहारिक है। युग-युगान्तरों तक विश्व में इसका व्यवहार होता आया है। कुछ विकृत रूप में आज भी संसार के विभिन्न देशों में यह विद्यमान हैं। अब इस युग की सबसे बड़ी पुकार वेदों के पावन ज्ञान के आलोक में वैदिक समाजव्यवस्था का पुनर्निर्माण करना है। इस वैदिक समाज व्यवस्था से ही नव समाज का निर्माण होगा। अथवा प्राचीन समाज-व्यवस्था का पुनः प्रचलन होगा। इस व्यवस्था की स्थापना के हेतु आज आर्यो को प्रयत्नशील होना है।

पूर्व मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश
(प्रस्तुत लेख 1959 के गंगाप्रसाद उपाध्याय अभिनन्दन ग्रंथ से साभार)

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं

अथवा

गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 11,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

-: निवेदक :-

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

शारीरिक स्वास्थ्य

❒ सुश्री कञ्चन आर्या

बच्चो! सबसे पहले तो आपको इस बात को याद रखना होगा कि यदि आप जीवन में सफल होना चाहते हैं, तो आपके शरीर का स्वस्थ और बलवान होना बहुत आवश्यक है। यदि शरीर स्वस्थ होगा, तो आपके जीवन के अन्य दोनों पक्षों की उन्नति भी शीघ्र और ठीक प्रकार हो सकेगी। आपने सुना भी होगा कि 'स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है।' यही कारण है कि मैंने सबसे पहले शरीर और इससे सम्बन्धित सभी पक्षों को लेकर लिखना आवश्यक समझा।

सबसे पहले प्रात: काल से लेते हैं। स्वास्थ्य को अच्छा रखने के लिए सुबह जल्दी जागना और रात को जल्दी सोना आवश्यक है। आप सबने इस विषय में यह अवश्य ही पढ़ा या सुना भी होगा कि Early to bed and early to rise makes a man healthy, wealthy & wise. परन्तु आजकल बिल्कुल इससे उल्टा रिवाज़ (trend) है। आपके बच्चों की भी शायद यही आदत होगी, रात को एक-दो बजे तक पढ़ना और सुबह 8-9 बजे उठना। बच्चो, यह अच्छी आदत नहीं है। इसे बदलने के लिए शायद आपको अधिक मेहनत करनी पड़े, लेकिन यदि एक बार जल्दी उठने की आदत डाल लेंगे, तो स्वस्थ और खुश रहेंगे। जो जल्दी उठ जाता है, उसकी सारी दिनचर्या बहुत ही अच्छे ढंग से चलती है। उसके सब काम ठीक समय पर और ठीक तरह से हो जाते हैं। रात सोने के लिए बनाई गई है। 6 से 7 घंटे की नींद आप लोगों के लिए काफी है। इससे अधिक सोने पर जहाँ आलस्य बहुत अधिक बढ़ जाता है, वहीं आपकी पढ़ाई का काम भी पूरा नहीं हो पाएगा। अत: रात को 10-11 बजे के बीच सोकर प्रात: 4-5 बजे के बीच उठ जाना चाहिए।

जो लोग सूर्य उदय होने के बाद उठते हैं, उनका पेट ठीक तरह से साफ नहीं होता। उन्हें कब्ज की शिकायत बनी रहती है, जबकि स्वस्थ रहने के लिए पेट का रोज अच्छा तरह साफ (bowel clear) होना बहुत आवश्यक है। अन्यथा अनेक प्रकार के रोगों के साथ-साथ सुस्ती और नींद की इच्छा बनी रहती है। यदि आप में से किसी को कब्ज (constipation) की शिकायत हो, तो एक तांबे का लोटा या गिलास ले लें। रात को उसमें पानी भर कर रख दिया करें तथा सुबह वही पानी पीकर थोड़ा टहल लें। आवश्यक समझें, तो इस पानी को गर्म करके भी पी सकते हैं। इसके बाद आपका पेट ठीक प्रकार से साफ हो जाएगा।

दाँतों को स्वस्थ, नीरोग और दृढ़ बनाने के लिए प्रतिदिन दाँत साफ करने के साथ-साथ इस बात का ध्यान अवश्य रखें कि जब भी भोजन करें या कुछ खायें तो उसके बाद अच्छा तरह से कुल्ला अवश्य कर लेना चाहिए। इससे दाँतों के बीच भोजन आदि के कण सड़ते नहीं हैं। ऐसा न करने से दाँतों में कीड़ा आदि लगने का डर रहता है। रात को सोते समय भी ब्रुश अवश्य करना चाहिए। आप सब यह अच्छी तरह जानते ही होंगे कि ब्रुश दाँतों में ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर की ओर ही करना चाहिए।

इसके बाद अपनी सुविधा के अनुसार आप सबको नहाने से पहले या बाद में कुछ आसन अथवा व्यायाम अवश्य कर लेने चाहिए। यदि स्नान से पहले आसन करें, तो उसके एकदम बाद ही स्नान न करें। कुछ प्रतीक्षा कर लें कि पसीना सूख जाए और शरीर का तापमान सामान्य हो जाए। सारा दिन बैठे-बैठे पढ़ाई करने से शरीर के सभी अंग जकड़ने लगते हैं। यदि आप आसन कर लेंगे तो सभी अंगों का व्यायाम तो होगा ही शरीर में फैट भी जमा नहीं हो पाएगा। उसी समय या नहाने के बाद कुछ देर प्राणायाम भी कर लेने चाहिए। आप अनुभव करेंगे कि प्राणायाम करने पर मन शान्त हो जाता है। तब आप आँखें बन्द करके 5-10 मिनट ईश्वर का स्मरण व प्रार्थना आदि अवश्य करें। इन दोनों को करने से स्मरण-शक्ति बढ़ती है। इससे आपको पढ़ाई के समय concentrate करने में भी सहायता मिलेगी। प्रात: काल यदि आप 20-25 मिनट का समय इन दोनों कार्यों के लिए दे देंगे, तो सारा दिन चुस्त और स्वस्थ रह सकते हैं।

बच्चो! आप लोग आँखों की कीमत अच्छी तरह जानते ही हैं। इन आँखों की सुरक्षा के लिए प्रतिदिन प्रात: साफ पानी से छींटे लगाने चाहिए। ये छीटें मुँह में पानी भरकर लगायें, परन्तु बहुत जोर से नहीं। दोनों आँखों में 50-50 छींटे लगा लेने चाहिए। पढ़ते समय, टी.वी. देखते समय और कम्प्यूटर पर काम करते समय उचित प्रकाश तो होना ही चाहिए। इसके साथ जब भी आपको यह महसूस हो कि आँखे थक गई हैं या उन पर बहुत जोर पड़ रहा है तो थोड़ी देर के लिए आँखों पर हथेलियाँ रखकर आँखें बन्द कर लें और उन्हें आराम दें। इससे ये आँखें स्वस्थ रहेंगी, क्योंकि बहुत समय तक लगातार एकटक टी.वी. देखने व कम्प्यूटर पर काम करने से इन पर बुरा असर पड़ता है।

आप जब जानते हैं कि शरीर के रोमकूपों से प्रतिक्षण पसीने के द्वारा मल निकलता रहता है। पसीना तो भाप बनकर उड़ जाता है, परन्तु मल से रोमछिद्र बन्द हो जाते हैं। अत: प्रतिदिन स्नान करना आवश्यक है। गर्मियों में पसीना अधिक आता है। इसलिए इस मौसम में प्रात: और सायं दो बार स्नान करें तो अच्छा है। इससे शरीर की बदबू दूर हो जाती है तथा सुस्ती दूर होकर स्फूर्ति आ जाती है। मैंने देखा है कि बहुत-से बच्चे आलस्यवश स्नान नहीं करते और पसीने की बदबू दूर करने के लिए शरीर पर deo, perfume आदि छिड़कते रहते हैं। बच्चो, यह आदत गन्दी और स्वास्थ्य के लिए हानिकर है। नहाने के लिए सर्दियों में पानी गर्म करते हैं, परन्तु बहुत अधिक गर्म पानी का प्रयोग नहीं करना चाहिए। आयुर्वेद में सिर में गर्म जल से नहाने का निषेध किया है इससे बाल जल्दी सफेद होते हैं तथा नेत्र दृष्टि भी कमजोर होती है। अत: सिर व आँखें धोने के लिए अधिक गर्म पानी का प्रयोग न करें। इसके लिए पानी इतना ही गर्म करें, जिससे केवल पानी का अधिक ठण्डापन ही दूर हो। शरीर पोंछने के लिए खुरदरे तौलिये का ही प्रयोग करें तो अच्छा है। इसके रगड़ने से त्वचा के रोम-कूप खुल जाते है तथा पानी अच्छी तरह सूख जाता है। स्नान करते समय कोहनियों और एड़ियों की अच्छी तरह सफाई करना याद रखें। बहुत लोग इस बात का ध्यान नहीं रखते और उनकी कोहनियाँ एवं एड़ियाँ मैल से सख्त और काली हो जाती हैं। इसके साथ-साथ मल-मूत्र-इन्द्रियों की सफाई करनी भी आवश्यक है। मूत्रेन्द्रिय की सफाई के लिए हमेशा ठण्डे पानी का ही प्रयोग करें। इससे उत्तेजना (excitement) शांत होती है, जबकि गर्म पानी से बढ़ती है। इन इन्द्रियों की सफाई न करने से उनमें सफेद मल-सा जम जाता है, जिससे खुजली आदि होने लगती है। कक्षा या सभा में बैठे

स्वास्थ्य दर्पण

खुजली करना जहाँ शिष्टाचार के विपरीत है, वहीं अनेक प्रकार की बुरी आदतें पड़ने का भी डर रहता है। अतः ब्रह्मचर्य की सुरक्षा के लिए यह आवश्यक है।

सप्ताह में एक बार, नहाने से पहले शरीर पर तेल की मालिश कर लें, तो बहुत लाभप्रद रहेगा। इससे पोषण के साथ-साथ त्वचा मुलायम भी बनती है। तिल का तेल मालिश के लिए अधिक उपयोगी है। सर्दियों के मौसम में तो मालिश बहुत जरूरी है। अतः यदि समय हो तो सप्ताह में दो बार भी कर सकते हैं।

भोजन में शरीर के अनुकूल जो पदार्थ हों उन्हें ही लेना चाहिए। क्योंकि हम खाना इसलिए खाते हैं क्योंकि इससे शरीर की रक्षा और पोषण होता है। इसलिए खाने में स्वाद को नहीं, अपितु पदार्थो के गुणों को अधिक महत्व देना चाहिए। नाश्ते में दूध, फल, दलिया, आटे से बनी ब्रेड आदि हल्के और सुपाच्य पदार्थ ही लेने चाहिए। यह ध्यान रहे कि नाश्ता उतना ही लें, जो अनुकूल हो और जिससे पेट में भारीपन महसूस न हो। बच्चो, आप लोग नाश्तें में दूध का सेवन अवश्य करें यह एक पूर्ण और आदर्श भोजन है। चाय, कॉफी, मैदे की ब्रेड या अन्य पदार्थ, अण्डा, मांस, अधिक खटाई, लाल मिर्च, गर्म मसाला, चटपटे पदार्थों आदि का सेवन न तो नाश्ते में करना चाहिए और न भोजन में। ये पदार्थ दुष्ट भोजन के अन्तर्गत गिने जाते हैं। चाय, कॉफी जैसे पदार्थ शरीर में उत्तेजना पैदा करके वीर्य को पतला कर देते हैं। मैदे से बने पदार्थ पेट को खराब करके कब्ज पैदा करते हैं इससे मल-त्याग के लिए अधिक देर तक बैठकर बल लगाना पड़ता है, परिणामतः वीर्य का नाश होता है। अधिक चटपटी चीजें, खटाई, मिर्च आदि खाने से वीर्य दूषित होने लगता है। अतः इससे ब्रह्मचर्य का नाश और नपुंसकता की सम्भावना बढ़ जाती है।

मेरे बच्चो! अब मैं आपका ध्यान जंक फूड की तरफ ले जाना चाहती हूँ, जिसे आजकल खाने का बहुत रिवाज़ हो गया है। आप जैसे बच्चों को घर का या साधारण भोजन पसन्त ही नहीं आता। वे स्वाद के कारण केवल junk/fast food खाना ही पसन्द करते हैं। परन्तु इस पर किये गये अनुसन्धानों से जो हानिकारक परिणाम सामने आये हैं, वे तो एकदम चौंकाने वाले हैं। प्यारे बच्चो! इस प्रकार के भोजन में पौष्टिक तत्त्व, जैसे-प्रोटीन, विटामिन, खनिज पदार्थ, रेशे आदि तो बहुत कम मात्रा में तथा fat, trans fats, sugar, calories आदि अधिक मात्रा में पाये जाते हैं। इससे शरीर का भार और इन्सुलिन की खपत बहुत बढ़ जाती है। परिणामतः हाई ब्लड प्रेशर, हृदय रोग, कोलेस्ट्रोल में वृद्धि, धमनियों में रूकावट, रक्तसंचार में रूकावट, डायबिटीज़ आदि रोग पैदा होने लगते हैं। इस तरह के भोजन में कुछ इस प्रकार के पदार्थ (nitrates, artificial sweeteners, monosodium glutamate) पाये जाते हैं, जिनसे माइग्रेन, सिरदर्द आदि रोग हो जाते हैं। कुछ पदार्थों से बुरे किस्म का कोलेस्ट्रॉल बढ़ने लगता है तथा अच्छे किस्म का घटने लगता है। इस भोजन में मानसिक स्वास्थ्य के लिए जरूरी तत्व जैसे- anti-oxidants, omega-3, oils, folates आदि कम मात्रा में पाये जाते हैं, तथा emulsifiers, preservatives, stabilizers, flavours अधिक होते हैं, जिनसे डिप्रेशन की अनुभूति होती रहती है। इनमें सोडियम ज्यादा होने से हाई ब्लड प्रेशर का खतरा भी बढ़ जाता है। इसके अतिरिक्त इस प्रकार के भोजन में जो fatty, acids पाये जाते हैं, उनसे शरीर में बायोकैमिकल परिवर्तन होते हैं। परिणामतः यौन-सम्बन्धी विकार (sexual disorderslibido, female ovulation & sperm count पर बुरा प्रभाव) होते हैं। बच्चों, कहाँ तक लिखूँ? जिस जंक फूड के स्वाद पर आप जैसे लोग फिदा हैं, उसके बारे में Paul Johnson & Paul Kenny, Scripps Research Institute (2008) का तो यहाँ तक कहना है कि इस तरह के भोजन में पाये जाने वाले तत्व मस्तिष्क की क्रियाओं को इस प्रकार परिवर्तित कर देते हैं, जिस प्रकार कोकीन और हेरोइन। National Heart, Lungs & Blood Institute (NHLBI) के द्वारा एक अध्ययन किया गया। इसके आधार पर 1 जनवरी 2005 को जो लेख प्रकाशित किया गया था, उसके अनुसार तो 15 वर्ष से अधिक आयु वाले युवाओं में जंक फूड से भार की वृद्धि के साथ इन्सुलिन की खपत बहुत अधिक बढ़ जाती है। इससे उनमें टाइप-2 डायबिटिज़ का रिस्क भी बढ़ जाता है। इस पर किये गये अनुसंधानों से यह भी परिणाम निकले हैं कि इस भोजन से मानसिक रोगों और डिप्रेशन की संभावना बढ़ जाती है। बच्चों! जरा सोचो कि यह भोजन है या जहर? आप शरीर की रक्षा के लिए खाते हैं या शरीर को नष्ट करने के लिए? अतः यदि आपको अपने शरीर की रक्षा करनी है और शरीर का धर्म निभाना है, तो पिज्जा बर्गर आदि जंक फूड से बच कर रहो। सदा याद रखो कि 'हम खाते हैं जीने के लिए, न कि जीते हैं खाने के लिए।' एक महापुरुष का कहना है कि हम लोग मनचाहा (स्वादयुक्त) भोजन खाकर शरीर में अनचाहे रोग पैदा कर लेते हैं। अतः यदि मनचाहा स्वास्थ्य प्राप्त करना है, तो अनचाहा भोजन खाना होगा।

बच्चो, एक बात का ध्यान अवश्य रखें कि खाते समय मन पूरी तरह निश्चिन्त और शान्त होना चाहिए। हड़बड़ाहट में न खाकर अच्छी तरह चबा-चबा कर ही खाने की आदत बनायें। खाते समय चिन्ता, गुस्सा आदि करने से शरीर के अन्दर पाचक-रसों का स्राव ठीक से नहीं होता, जिससे भोजन का पाचन भी ठीक तरह नहीं होता। अतः भोजन के ठीक प्रकार से पाचन के लिए खाते समय फोन, टी.वी., बातचीत आदि बन्द रखें तो ठीक रहेगा।

रात का भोजन सोने से 2 घंटे पहले अवश्य कर लेना चाहिए। इससे खाना अच्छी तरह हजम हो जाता है और नींद भी ठीक तरह आती है। नींद ठीक आने से प्रातः पेट भी ठीक प्रकार साफ हो जाएगा और अगली दिनचर्या ठीक प्रकार चलेगी। भोजन के बाद थोड़ा बाहर घूम लें। रात को 10-10:30 बजे तक सो जाना ठीक है। अधिक देर तक जागना ठीक नहीं। ध्यान रहे कि अधिक गुदगुदे बिस्तर (डनलप के गद्दे) पर न सोयें। तख्त या नीचे फर्श पर पतला-सा गद्दा बिछाकर सोयें, यह ब्रह्मचर्य के साथ-साथ रीढ़ की हड्डी के लिए भी उपयोगी है। एक बिस्तर पर अकेले ही सोयें, दो-दो मित्रों को मिलाकर सोना ब्रह्मचर्य के लिए ठीक नहीं है। सिर के नीचे रखने का तकिया पतला ही होना चाहिए, जैसा कि उत्कर्ष और वागीशा, आप लोग घर में प्रयोग करते थे। मोटा तकिया प्रयोग करने से गर्दन में दर्द या cervical spondylitis होने की सम्भावना रहती है।

मेरे बच्चे! क्षमा करना। पत्र कुछ लम्बा हो गया, परन्तु यह सब लिखना आवश्यक भी था। इन बातों पर ध्यान दिये बिना आप अपने ब्रह्मचर्य और शरीर के धर्म का ठीक तरह पालन नहीं कर सकते। इस विषय में बहुत कुछ बताने योग्य है। आप सब स्वयं समझदार है। आवश्यकता पड़ने पर बीच-बीच में आप पूछ सकते हैं। आप सब अपना ध्यान रखना। (क्या है आपके जीवन की सच्चाई से साभार)

टंकारा ट्रस्ट इंटरनेट पर
श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा
www.tankara.com पर उपलब्ध है

आज की चुनौती- वैदिक संस्कृति की रक्षा

❑ पं. उम्मेद सिंह विशारद

आज जब अंग्रेजों को भारत छोड़े 66 वर्ष हो गये हैं, उनके जाते ही उनकी पाश्चात्य संस्कृति को भी चला जाना चाहिए था किन्तु वह भारत पर और प्रभावी हो गयी। कारण हमने अंग्रेजों को भगाने के लिए आन्दोलन तो किया किन्तु पाश्चात्य संस्कृति को भगाने के लिए कुछ नहीं किया, अपितु पाश्चात्य संस्कृति को अपना कर भारतीयों ने अपने रंग-रंग में समा लिया। आज पाश्चात्य संस्कृति व संस्कारों ने हमारी वैदिक संस्कृति को अधमरा कर दिया। वैदिक संस्कृति की रक्षा करना आज हमारी सबसे बड़ी चुनौती बन गयी हैं। भारत विश्व गुरु बनने की बजाए, पाश्चात्य संस्कृति का गुलाम बन गया है।

युग पुरुष महर्षिदयानन्द ने इस चुनौती को स्वीकार करके वैदिक आर्ष संस्कृति को पुन: जीवित करने के लिए अपना बलिदान कर दिया था। आज उनके द्वारा बनाया गया आर्य समाज वैदिक संस्कृति को पुन: जीवित करने के लिए उसमें प्राण फूंक रहा है।

वास्तव में हम भारतीयों ने अंग्रेजों से नफरत तो की पर उनके द्वारा लार्ड मैकाली की शिक्षा को स्वीकार कर लिया और अपने जीवन में पाश्चात्य संस्कृति आज हमारे घरों के चूल्हों तक पहुंच गयी है।

इतिहास देखने से प्रतीत होता है कि भारत की संस्कृति पांच हजार पूर्व से संसार के अनेक संस्कृतियों के सम्पर्क में आई किन्तु प्रतिस्पर्धा की जगह अन्य संस्कृतियों को आत्मसात कर गई या अन्य संस्कृति इसके मायने सामने विलीन हो गयी। ऐसा समय कभी नहीं आया कि वैदिक संस्कृति ने अपना अस्तित्व खो दिया है या लुप्त हो गयी हो। स्पष्ट है भारतीय वैदिक संस्कृति ईश्वरीय वाणी वैदिक धर्म पर टिकी है और इसी कारण अपनी पहचान न खो सकी। क्योंकि संस्कृति अध्यात्म है और सभ्यता भौतिक है सभ्यता आगे-आगे विकसित होती है और संस्कृति अपनी पहचान बनाये रखती है।

भारतीय संस्कृति कई संस्कृतियों के सम्पर्क में आई कभी मुगलों के कभी अंग्रेजों के सम्पर्क में आई, सभी ने इसको रोदने का कार्य किया, किन्तु भारतीय संस्कृति झुकी नहीं अपितु अन्य संस्कृतियों को प्रभावित करती रही। यही कारण है आज विश्व में अनेक संस्कृतियाँ जो उत्पन्न हुई थीं उनका नाम लेवा भी नहीं है। एक भारतीय संस्कृति ही ऐसी है जो विगत पाँच हजार वर्षो से अनेक संकटों से झूझते हुए भी आज तक जीवित है।

भारतीय संस्कृति में भारत में मुसलमानों के आने से उन्हें म्लेच्छ कहते थे और उनके साथ खान-पान व अन्य कृत्य अधर्म समझते थे, क्योंकि मुसलमान भारत में लुटेरे बनकर आये थे तथा अपने धर्म को तलवार के बल मनवाने को भारतीयों को विवस करते थे अत्याचार करते थे। किन्तु उनके क्रूर अत्याचार के बाद भी मुस्लिम संस्कृति भारतीय संस्कृति में अपना प्रभाव न डाल सकी और अंग्रेज भारत में व्यापार करने आए थे, अपनी संस्कृति का प्रचार करने नहीं आए थे। किन्तु उनकी संस्कृति भारतीयों के संस्कारों में बसती चली गई। मैं इसके कई कारण समझाता हूँ कि भारत की सामाजिक व्यवस्था शोषण प्रवृति की थी। सामन्तशाही हुकूमत करते थे, भयंकर जातिवाद, छुआछुत, धार्मिक अन्धविश्वास, अनेक पाखण्डों से समाज ग्रस्त हो रखा था। पाश्चात्य संस्कृति में भारत के शोषित व शोषण वर्ग को अपना-अपना लाभ दिखाई दिया और वह पाश्चात्य संस्कृति में डूबते चले गए।

यह भी कटु सत्य है हम अंग्रेजों को चाहे कितना बुरा बताएँ किन्तु उनके आने से भारत में अनेक पाखण्ड समाप्त भी हो गए। अंग्रेजों की संस्कृति धर्म पर आधारित नहीं थी। भारत की संस्कृति का आधार आध्यामिकता और पाश्चात्य संस्कृति का आधार लौकिक था। हम पहले कह चुके हैं कि भारतीय संस्कृति अनेक हमलों के बाद भी यथावत रही और जो संस्कृति अंग्रेजों के आने के बाद भी मरते-मरते जीवित थी वहीं संस्कृति अंग्रेजों के चले जाने के बाद मुर्दे के रूप में दिखाई देती है। आज हम अपनी संस्कृति का नाम तो लेते हैं पर जीवन में उतारने को तैयार नहीं हैं। हम अपने को धोखा दे रहे हैं। मुर्दा भारतीय संस्कृति से चिपके मात्र हैं। आज पाश्चात्य संस्कृति को हम अपनी वैदिक संस्कृति को हम अपनी वैदिक संस्कृति से बलवती मान रहे हैं।

यदि जितना परिश्रम हमने अंग्रेजों को निकलने में की उसका आधा भी अपनी भारतीय वैदिक संस्कृति को बचाने में करते तो आज यह स्थिति नहीं होती। वास्तव में भारत में धर्माचार्यो ने संस्कृति का प्रचार तो किया किन्तु दुकानदारी व स्वास्थ्य के रूप में वैदिक संस्कृति के टुकड़े-टुकड़े अनेक रूप में भारतीयों को परोसा और भारत के बुद्धिजीवियों व युवा वर्ग दिशाहीन होकर सत्यमार्ग न मिलने के कारण उधर झुकता चला जा रहा है। यही कारण है आज विदेशों में नाच गाने को संस्कृति समझ लिया है। भारत मे भी धार्मिक अन्धविश्वास, सामाजिक कुरूतियों व रूढ़ी परम्पराओं व काल्पनिक मान्यताओं को संस्कृति का नाम दिया जा रहा है। संस्कृति का वास्तविक स्वरूप ईश्वरीय धर्म ईश्वरीय सृष्टिक्रम व ईश्वरीय संविधान वेदों की मान्यता है।

सुझाव:

❑ आर्य समाज के विशाल संगठन को आपसी मतभेद भुलाकर, भारतीय वैदिक संस्कृति को बचाने के लिए आन्दोलित होना पड़ेगा। ❑ आर्य समाज को भारत की शिक्षा पद्धति में वैदिक आर्षग्रन्थों का व सत्यार्थ प्रकाश के दस सम्मुलासों को पाठ्यक्रम में अनिवार्य कराना होगा। ❑ राजनीति में आर्य विद्वानों को अधिक से अधिक प्रवेश कराना पड़ेगा। ❑ आर्य नेतृत्व को अनिवार्य करना पड़ेगा कि प्रत्येक आर्य परिवारों से एक बच्चा गुरुकुल में अवश्य प्रवेश करायें। ❑ भारत वर्ष में समय-समय पर जो ज्वलन्त समस्यायें पैदा होती रहती हैं। उन समस्याओं को एक रूपता में उठाकर आन्दोलन करना पड़ेगा। मीडिया को आधार बनाना पड़ेगा।

अन्त में मुझे यह कहना है कि विश्व में वैदिक आर्ष संस्कृति को केवल आर्य समाज संगठन की बचा सकता है। यदि हम आप सोते रहे तो आने वाला कल ऐसा भी आ सकता है कि भावी पीढ़ी को वैदिक संस्कृति की एक झलक देखने को भी तरसना पड़े। आइए वैदिक आर्य संस्कृति को बचाने के लिए हम सजग हो जायें।

- वैदिक प्रचारक, उत्तराखण्ड, मो. 9411512019

जीवन रक्षा के लिए आत्मबल को बनाए रखें

❒ डा. अशोक आर्य

जिस व्यक्ति का आत्मबल मजबूत है, उसे कोई पराजित नहीं कर सकता। आत्म बल ही सब सुखों का आधार है। जिसमें आत्मबल नहीं, वह जीवित रहते हुए भी मृतक के सामान है। कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो प्रतिक्षण अपनी ही निंदा करते दिखाई देते हैं। उनका यह स्वभाव उनमें आत्मबल की कमी ही दिखाता है। अपने पास बलवान सेना होते हुए भी आत्मबल विहीन योद्धा रणक्षेत्र में विजयी नहीं होता, जब कि आत्मबल का धनी कम सेना होते हुए भी विशाल सेना को नष्ट कर देता है। इसलिए जीवन की उन्नति के लिए सफलता के लिए आत्म बल को हाथ से नहीं जाने देना चाहिए। इस सम्बन्ध में यजुर्वेद तथा सामवेद में मन्त्र इस प्रकार हमें आदेश दे रहा है-

यो नः अर्णो, यश्च निष्ट्यो जिघांसति।
देवास्तं सर्वे धुर्वन्तु, ब्रह्मवर्म ममान्तरम्।। ऋग्वेद 6.75.

जब भी कोई हमारा अपना मित्र या कोई परकीय अथवा बाहरिय व्यक्ति हमें नष्ट करना चाहता है तो समस्त देवता उसे नष्ट करें। आत्मबल युक्त में सुरक्षित रहूँ। ऊपर मन्त्र के भावार्थ से स्पष्ट होता है कि मन्त्र दो बातों की ओर संकेत करता है। (1) जो व्यक्ति दूसरों की हानि करते हैं अथवा दूसरों को मारते हैं, देवता ऐसे लोगों को नष्ट करें। (2) ब्रह्म ही आर्तरिक शक्ति है।

अपने स्वार्थ को सम्मुख रखते हुए तथा उसकी पूर्ति के लिए अनेक समय पराये तो पराये अपने भी हानि पहुँचाने के लिए क्रियमाण होते हैं। लोभ मनुष्य का सब से बड़ा शत्रु है। लोभ के कारण शत्रु तो प्राय: विनाश का खेल खेलते ही हैं, अनेक बार यह लोभ अपने मित्रों को, परिजनों को भी शत्रु बना देता है। परिवार की धन सम्पत्ति के प्रश्न पर अनेक बार भाइयों को लड़ते व एक दूसरे को काटते देखा है। भारत में एक जाति तो माता पिता तक को भी नहीं छोड़ती। लोभ के ही कारण औरंगजेब ने अपने ही जनक, अपने ही पिता बादशाह शाहजहाँ को बंदी बनाकर, उसकी सत्ता को छीन लिया। क्या कमी थी सत्ता विहीन रहते हुए भी? सब प्रकार की सुख, संपदा, नौकर, चाकर उसके पास थे। सब प्रकार के सुख उसे प्राप्त थे किन्तु फिर भी अपने ही पिता को जेल में डाल कर उससे सत्ता छीन कर अपना आधिपत्य स्थापित करने की। यह सब लोभ का ही तो परिणाम है। आज हमारे देश की भी यह ही अवस्था हो रही है। देश के उच्च स्थानों पर बैठे अनेक मंत्रीगण आज जेल की सींखचों में बंद हैं क्योंकि लोभ ने उनका पीछा नहीं छोड़ा। अपार धन के स्वामी होते हुए भी लोभवश धन को प्राप्त करने के लिए गलत मार्ग पर चले व चल रहे हैं। तभी तो माननीय अन्ना हजारे तथा बाबा रामदेव को सरकार के सम्मुख दीवार की भाँति खड़ा होना पड़ रहा है। श्री अरविन्द केजरीवाल जैसे लोगों को कहना पड़ता है कि जो संसद लोकतंत्र का मंदिर होनी चाहिए थी, वह आज भ्रष्टाचारियों का अड्डा बनती चली जा रही है, इसे रोकने का जिम्मा जनता का है। जनता अपने अधिकारों का ठीक प्रयोग कर इसकी अस्मिता की रक्षा करे।

पारिवारिक संपत्ति के बँटवारे के समय आज भाई अपने ही भाई के अधिकार पर कब्जा जमाने के लिए लड़ता हुआ देखा जा सकता है। इस अवसर पर अनेक संकट खड़े होते हैं। अनेक बार तो कुछ लोग इस अवसर पर अपने जीवन को भी खो बैठते हैं। यह सब क्या है? यह हमारे अन्दर दुर्गुणों की, दुर्वासनाओं की सत्ता का ही परिणाम है। जब हम दुर्गुणों को अपने जीवन का अंग बना लेते हैं तो हम उसके ऐसे ही परिणाम पाते हैं। इन दुर्गुणों के ही कारण हम अपने ही परिजनों के लिए कष्टों का कारण बनते हैं। जब परिजन ही धन के लोभ में एक दूसरे के विनाश को तत्पर हो सकते हैं ता अन्यों की क्या चर्चा करें?

अन्य तो होते ही अन्य हैं। वह तो प्रतिक्षण अवसर की ही खोजा में होते हैं। अवसर पाते ही महाविनाश का कारण बनते हैं। अत: अन्य लोग शत्रु भावना से अथवा लोभ की भावना से दूसरों की धन सम्पदा व भूमि पर बलात् अधिकार कर उन्हें हानि पहुँचाने का यत्न करते हैं। मन्त्र कहता है कि जहाँ भी ईर्ष्या-द्वेष की भावना है, जहाँ भी लोभ प्रभावी है, वहां एक मनुष्य दूसरे की हानि करने में कभी संकोच नहीं करता। जो व्यक्ति दुर्गुणों तथा दुर्व्यसनों से ग्रसित है, वह कभी दूसरे की सहायता नहीं कर सकता, वह तो दूसरे का विनाश कर उसकी धन सम्पदा का स्वामी बनने का प्रयास करता है। तभी ही तो प्रतिदिन लूटपाट, आगजनी व कत्लेआम की घटनाएं हमें सुनने को मिलती हैं। कर्मो से नष्ट-भ्रष्ट ऐसा व्यक्ति ओर कर भी क्या सकता है? विनाश ही उसका उद्देश्य होता है, विनाश ही उसका जीवन होता है तथा विनाश ही उसका कर्त्तव्य होता है।

मन्त्र का दूसरा भाग रक्षा का मार्ग बताते हुए कहता है कि वह प्यारा प्रभु ही मेरा आर्तरिक कवच है। परमात्मा का अभिप्राय उस महान् प्रभु से है उस ज्ञान से है, उस सत्य से है, उस आत्मबल से है, उस आस्तिकता से है, जिसकी शरण में रहते हुए हम अनेक सुखों के स्वामी बन अपने जीवन को रक्षित करते हैं। परमात्मा से रक्षित हो जब हम आत्मबल के स्वामी बन जाते हैं तो सब प्रकार की सम्पत्ति की रक्षा की शक्ति हम में आ जाती है, जब कि अस्तिक व्यक्ति सब प्रकार के पापों से स्वयं को रक्षित करने में सक्षम होता है। यह आत्मबल तथा आस्तिकता ही मनुष्य का आर्तरिक बल है। जो मानव इन दो शक्तियों का धनी है, उसकी आर्तरिक शक्तियां इतनी शक्तिशाली हो जाती हैं कि वह बड़े से बड़े संकट का सामना भी बड़ी सरलता से कर सकता है। जब इन दोनों के साथ ज्ञान और सत्य मिल जाते हैं तो सोने पर सुहागे का काम होता है। ज्ञान और सत्य मानव को बल प्रदान करने वाले होते हैं। इस प्रकार आत्मबल तथा आस्तिकता के साथ जब सत्य व ज्ञान का मिश्रण हो जाता है तो यह मिलकर मानव का आर्तरिक कवच बन जाता है। यह आर्तरिक कवच मानव को अन्दर की अनेक बुराइयों से रक्षा का कार्य करता है।

- 104, शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी, गाजियाबाद

आवश्यकता है

महर्षि दयानन्द जन्मभूमि टंकारा में चल रहे महर्षि दयानन्द सरस्वती अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ऐसे उपाचार्य की आवश्यकता है जो काशिका तथा महाभाष्य एवं निरुक्तादि पढ़ाने में सक्षम हो। योग्यतानुसार वेतन एवं आवास-भोजनादि की सुविधा विद्यालय में दी जाएगी। नीचे लिखे पते पर अपने प्रमाणपत्र, अनुभव तथा पासपोर्ट साईज की फोटो के साथ आवेदन पत्र भेजें।

रामदेव शास्त्री आचार्य, मोबाइल 09913251448
उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, मोरवी, जिला राजकोट, गुजरात-363650

શ્રી રામ મનુષ્ય હતા

રમેશચન્દ્ર મહેતા
મો. ૦૯૪૨૭૦૦૧૧૧૯ Email: pt.rammehta@gmail.com

નર કોણ?

અવતારવાદિ મૂર્તિપૂજકો શ્રી રામચન્દ્રજીને 'પરબ્રહ્મ' માને છે અને એમના 'પરબ્રહ્મત્વ'નું સમર્થન પણ કરે છે. પ્રશ્ન એ ઉદ્‌ભવે છે કે પરબ્રહ્મના લક્ષણ શું છે?

દર્શનશાસ્ત્રોમાં નિર્ગુણ, નિરાકાર, નિર્વિકાર, નિરવયવ, સર્વજ્ઞ, સર્વવ્યાપી, નિત્યાનન્દમય, સર્વાત્મા આદિ લક્ષણોંથી યુકતને પરબ્રહ્મ કહ્યા છે. જ્યારે કે રામાયણ કાવ્યના નાયક શ્રી રામચન્દ્રજી આ લક્ષણોથી વિપરીત જ જણાય છે. કારણ કે જો તેઓ

૧. નિર્ગુણ હોય તો રામાયણ કાવ્યની રચના જ ન થઈ શકે. કારણ કે નિર્ગુણીના ગુણોનું વર્ણન જ અસમ્ભવ છે, જ્યારે કે રામાયણ ગુણવર્ણનાત્મક કાવ્ય છે.
૨. જો તેઓ નિર્વિકાર છે તો, એમની રાવણ સાથે શત્રુતા તથા વિભીષણ સાથેની મિત્રતાનું કોઈ કારણ જ નથી.
૩. જો તેઓ નિરાકાર તથા નિરવયવ છે તો એમનો અરણ્યવાસ, ધનુષ્યબાણ ધારણ કરવા તથા યુદ્ધવિક્રમ કરવું વિગેરે સંભવ જ નહોતું.
૪. જો તેઓ સર્વજ્ઞ હતા તો સીતાજીનું હરણ કોણ કરી ગયું છે અને એમને કયાં સંતાડ્યા છે એની જાણકારી એમને સ્વયંભૂ થઈ જવા જોઈતી હતી અથવા તો સમાધિવસ્થામાં એનું જ્ઞાન થઈ જવું જોઈતું હતું, જેથી હમુમાનજીને એમને શોધવા માટે સમુદ્ર પાર જવાનો અને બીજો ઉદ્યમ કરવાની કોઈ જરૂર જ ન પડત.
૫. જો તેઓ સર્વવ્યાપી હતા તો તેઓ અયોધ્યામાં, દંડકારણ્યમાં, લંકામાં સર્વત્ર વ્યાપ્ત રહેવા જોઈતા હતા. ન તો કયાંય જવાની કે ન તો કયાંયથી આવવાની કોઈ જરૂર જ નહોતી. અને દશરથને પણ શોકનું કોઈ કારણ તો રહેતું જ નહોતું.
૬. જો નિત્યાનન્દમય હતા તો સીતાવનિયોગમાં કે અન્ય પ્રસંગોમાં તેઓ દુઃખ - શોક - મોહાદિમાં શા માટે ડૂબી ગયા?
૭. જો સર્વાત્મા હતા તો તેઓ રાવણમા, વિભીષણમાં, દશરથમાં, વાલી – સુગ્રીવમાં, કૈકેયી – મંથરામાં સર્વત્ર આત્મારુપે વ્યાપ્ત હતા જ. રાવણમાં અને એમનામાં તત્ત્વતઃ કોઈ ભેદ હતો જ નહીં! તો પછી સીતા એમની પાસે રહે કે રાવણની પાસે, એક જ વાત હતી. તો પછી સીતાજીની મુક્તિ માટે આટલી મોટી વાનર સેના ભેગી કરીને સમુદ્ર પર સેતુ બંધ બાંધવાની અને યુદ્ધમાં રાક્ષસો અને વાનરવીરોના સંહારની કે રાવણવધની આવશ્યકતા જ શું હતી?
૮. જો સર્વશક્તિમાન હતા તો પછી શા માટે વાનરરાજ સુગ્રીવ પાસે સહાયતા લેવી પડી?

કહેવાનો અભિપ્રાય એજ છે કે રામાયણ કાવ્યના મહાનાયક શ્રી રામચન્દ્રજી પરબ્રહ્મ નહોતા કે ન તો એમણે પોતાને કયારેય પરબ્રહ્મ કહ્યા હતા.

શ્રી રામ મનુષ્ય હતા

"કથં દેવગણશ્રેષ્ઠ આત્માનં નાવબુધ્યસે?"

ઉત્તરમાં શ્રી રામચન્દ્રજીએ કહ્યું કે

"આત્માનં માનુષં મન્યે
રામં દશરથાત્મજમ્" (યુદ્ધકાંડ, સર્ગ ૧૧૭।૧૧)

"હું મારી જાતને મનુષ્ય માનું છું." આઉત્તરથી જ સ્પષ્ટ છે કે શ્રી રામચન્દ્રજી પોતે પોતાને પરબ્રહ્મ નહોતા માનતા. જ્યારે એમને પોતાને જ પરબ્રહ્મત્વ સ્વીકાર્ય નથી, તો પછી હઠ પૂર્વક એમના પર થોપવાનો શું અર્થ છે? એટલે રામાયણના નાયક શ્રી રામચન્દ્રજી પરબ્રહ્મ ન હોઈ શકે.

તો પછી શું શ્રી રામચન્દ્રજી ઈશ્વર છે કે નહીં? તેઓ ઈશ્વર પણ નથી. કારણ કે ઈશ્વર પણ સર્વજ્ઞ, સર્વેશ્વર, સર્વનિયન્તા, અવ્યકત, અન્તર્યામી તથા જગતની ઉત્પત્તિનું કારણ છે. શ્રી રામચન્દ્રજીમાં આમાંનો એક પણ ગુણ દેખાતો નથી.

તો પછી શ્રી રામચન્દ્રજી શું છે? એનો ઉત્તર એજ છે કે તેઓ ઈશ્વરનો અંશાવતાર છ, અર્થાત્ આપણા જેવા મનુષ્ય જ છે. કારણ કે મનુષ્ય પણ ઈશ્વરાંશ જ હોય છે. શ્રીમદ્‌ભાગવતમાં કહ્યું છે કે –

એતન્નાવતારાણાં નિદ્યનં બીજભવ્યમ્।
યસ્યાંશાશેન સૃજ્યન્તે દેવતિર્યગ્નરાદયઃ॥

શ્રીમદ્ ભાગવત્ – સ્કંધ ૧॥

અર્થાત્ જે ચૈતન્યનો અંશ શ્રી રામચન્દ્રજીમાં છે, એજ આપણામાં પણ છે, એમાં લેશમાત્રની પણ ભિન્નતા નથી. તો પછી શ્રી રામચન્દ્રજીને આટલું શ્રેષ્ઠત્ત્વ શા માટે?

આ એક પ્રશ્ન સ્વાભિક રીતે ઊભો થાય છે. આનો ઉત્તર એજ છે કે જો કે શ્રી રામચન્દ્રજી સ્થૂળ શરીરથી આપણા જેવા જ છે પરન્તુ યોગ્યતામાં આપણા કરતા અનેકગણા શ્રેષ્ઠ છે અને એજ કારણે એમને શ્રેષ્ઠત્વ આપવામાં આવ્યું છે. વાતને સમજવા માટે આપણે વિજળીના ગોળાનું ઉદાહરણ જોઈએ –

વિજળીના ગોળા કાચમાંથી જ બને છે અને એમાં વિજળીનો જે ચૈતન્યાંશ હોય છે, એ પણ એક

જ હોય છે. તથાપિ પ્રત્યેક ગોળાના ચૈતન્યાંશ વધતો ઓછો હોવાને કારણે એની યોગ્યતા પણ વધતી ઓછી માનવામાં આવે છે. જેમ કે પાંચ વોટના ગોળા કરતા પન્દર વોટના ગોળાનો પ્રકાશ વધારે હોય છે, અને પન્દર વોટના ગોળા કરતા સાંહીઠ વોટના ગોળાનો પ્રકાશ વધારે તો સો વોટના ગોળાનો પ્રકાશ એના કરતા પણ વધારે હોય છે. એવી જ રીતે મનુષ્યમાત્રના શરીરનું બંધારણ તો લગભગ એક સમાન જ હોય છે, એના ઘટક તત્ત્વો જેવા કે – રક્ત, માંસ, હાડકા, ચામડી આ બધામાં પણ કંઈ વિશેષ તફાવત નથી હોતો, એવી જ રીતે પ્રત્યેક શરીરમાં એજ ઈશ્વરનો ચૈતન્યાંશ પણ વિદ્યમાન હોય છે તેમ છતાં એ ચૈતન્યાંશ પૂર્વમાં કરેલા કર્માનુસાર વધતો ઓછો હોય છે અને એના કારણે જ વ્યક્તિને શ્રેષ્ઠત્વ કે કનિષ્ઠત્વ મળે છે. પન્દર વોટના ગોળા સામે પાંચ વોટના ગોળાનો પ્રકાશ ફીક્કો લાગે છે તો સાંહીઠ વોટનો ગોળો સો વોટના ગોળા સામે ફીક્કો લાગે છે. બસ આજ ન્યાયથી શ્રેષ્ઠ મનુષ્ય સામે કનિષ્ઠ મનુષ્યનો પ્રભાવ ફીક્કો પડી જાય છે. રાજાની સામે સર્વ સાધારણ લોકો નમ્ર બની જાય છે, તથા રાજાને સર્વશ્રેષ્ઠ માને છે, એનું કારણ એજ છે કે સર્વસાધારણ લોકોની અપેક્ષાએ રાજામાં તેજસનો અંશ વધારે હોય છે. સમ્રાટને રાજા કરતા વધારે શ્રેષ્ઠ તો સાર્વસમ્રાટને સમ્રાટ કરતા પણ વધારે શ્રેષ્ઠ માનવામાં આવે છે. તો પછી આવા શતાવધિ સાર્વભૌમ રાજાઓ કરતા પણ અનંતગુણ શ્રેષ્ઠત્ત્વ જેમનામાં જોવા મળે છે, એવા શ્રી રામચન્દ્રજીને શ્રેષ્ઠતમ માની લેવામાં આવે તો એમાં દોષ શું છે? આજ શ્રેષ્ઠત્ત્વ કે સામર્થ્યને વિભૂતિમત્ત્વ કહે છે. આ વિભૂતિમત્ત્વ જેનામાં હોય, એ નિઃસન્દેહ ઈશ્વરની અંશાવતાર જ હોય છે – જેમ કે –

યત્ યત્ વિભૂતિમ્ સત્ત્વં શ્રીમત્ ઊર્જિતમેવ વા।
તત્તદેવાવગચ્છ ત્વં મમ તેજોંડશસંભવમ્॥

(શ્રીમદ્ ભગવદ્ ગીતા)

આ ભગવદુક્તિ પ્રમાણે ઉપર્યુક્ત કારણોથી શ્રી રામચન્દ્રજી મનુષ્યશરીર હોવા છતાં પણ અનન્તગુણિત અને વિભૂતિમાન હતા. ફલતઃ એમને શ્રેષ્ઠત્વ આપવામાં આવ્યું અને એમને ઈશ્વર પણ માની લેવામાં આવ્યા. શ્રેષ્ઠત્વ મનુષ્યના વિભૂતિમત્ત્વમાં હોય છે અને વિભૂતિમત્ત્વ મનુષ્યસાધ્ય હોય છે. જો નર કરની કરે, તો નરકા નારાયણ હોય. આ સન્તવચનાનુસાર મનુષ્ય જો પ્રયત્ન કરે, તો એના માટે શ્રી રામચન્દ્ર બનવું અસંભવ નથી.

આર્યસમાજ જામનગરનું અનુકરણીય સેવાકાર્ય

ગુજરાતના કાશી જામનગરમાં પાણીની ગંભીર સમસ્યા ઊભી થતા, સ્થાનીય ધાર્મિક સંતો-મહંતોએ નેતૃત્ત્વ લઈને જામનગર શહેરને પાણી પુરું પાડતા રણજીત સાગર ડેમમાં ભરાઈ ગયેલ કાંપ દૂર કરવાનો સંકલ્પ કર્યો હતા. આવા જનસેવાના કાર્યમાં આર્યસમાજ જામનગરે પણ ભાગ લેવાનો નિર્ણય કરી સમાજના આગેવાનો શ્રી મહેશભાઈ રાજાણી, કોષાધ્યક્ષશ્રી ચન્દ્રવદનભાઈ મહેતા અને ડૉ. શ્રી જોષી લાખોટા જળ સંચય સમિતિની મિટીંગમાં હાજર રહ્યા હતા. ત્યાં કબીર આશ્રમના પૂ. રામેશ્વરદાસજી, ચેમ્બરના પ્રમુખશ્રી લાખાભાઈ, બિપીનભાઈ વાઘર, ગંગદાસભાઈ પટેલ, ભીખુભાઈ વારોતરીયા, વસ્તાભાઈ કેશવાલા, ભરતભાઈ સુખપરીયા, ડૉ. એચ. જે. તન્ના, પ્રદીપભાઈ માધવાણી, આર. કે. શાહ, જીતુભાઈ લાલ, કરસનભાઈ ભૂતિયા, દિનેશભાઈ વોરા, વિનુભાઈ તન્ના, કિશોરભાઈ ગાલાણી અને પી. ટી. ચાંદ્રાની ઉપસ્થિતિમાં જળ સંચય સમિતિને આર્યસમાજ જામનગર તરફથી પચાસ હજાર રૂપિયાનો ચેક અર્પણ કર્યો હતો.

મહર્ષિ દયાનન્દ સરસ્વતી સ્મારક ટ્રસ્ટ ટંકારા સંચાલિત ઉપદેશક મહાવિદ્યાલયમાં નવા સત્રથી વિદ્યાર્થિઓને પ્રવેશ આપવામાં આવશે. વિદ્યાલયમાં બે પ્રકારના અભ્યાસક્રમ ચાલે છે –

૧. પ્રથમ અભ્યાસક્રમ ઉપદેશકનો, ચાર વર્ષનો છે. પ્રવેશ માટે વિદ્યાર્થી દસમું ધોરણ પાસ અને સોળ વર્ષની આયુનો હોવો જોઈએ. ઉપદેશકકક્ષામાં સંસ્કૃત, વેદ, દર્શન, ઉપનિષદ અને મહર્ષિ દયાનન્દના સમસ્ત ગ્રન્થ ભણાવવામાં આવે છે. સાથે ભજન-પ્રવચન અને વેદોક્ત કર્મકાંડનો અભ્યાસ પણ કરાવવામાં આવે છે.
૨. બીજો અભ્યાસક્રમ મહર્ષિ દયાનન્દ વિશ્વ વિદ્યાલય રોહતક (હરિયાણા) દ્વારા માન્યતા પ્રાપ્ત છે. આમાં પ્રવેશ લેવા માટે સાતમું ધોરણ પાસ હોવું જરૂરી છે. પૂર્વ મધ્યમાંથી લઈને આચાર્ય સુધીનો આ અભ્યાસક્રમ છે. આમાં પ્રાચ્ય સંસ્કૃત વ્યાકરણ, વેદ, દર્શન, ઉપનિષદ, ગણિત, વિજ્ઞાન, ઈતિહાસ, ભૂગોળ, અને મહર્ષિ દયાનન્દના સમસ્ત ગ્રન્થ ભણાવવામાં આવે છે. સાથે ભજન-પ્રવચન અને વેદોક્ત કર્મકાંડનો અભ્યાસ પણ કરાવવામાં આવે છે. કોમ્પ્યુટર પણ શીખવવામાં આવે છે.

પ્રવેશાર્થીએ નજીકની આર્યસમાજના અધિકારીના પ્રમાણપત્ર સાથે પંદરમી જુન પહેલા સંસ્થામાં આવેદન પત્ર મોકલી આપવું.

વધારે જાણકારી માટે સમ્પર્ક કરો આચાર્ય શ્રી રામદેવ શાસ્ત્રી, મો. નં. ૦૯૯૧૩૨૫૧૪૪૮ અથવા વ્યવસ્થાપક રમેશચન્દ્ર મહેતા મો. નં. ૦૯૪૨૭૦૦૧૧૧૯

શ્રી મહર્ષિ દયાનન્દ સરસ્વતી સ્મારક ટ્રસ્ટ
પો. તા. ટંકારા, જિ. રાજકોટ પિન. ૩૬૩૬૫૦

समाचार दर्पण

महर्षि दयानन्द जन्मभूमि टंकारा में

महर्षि दयानन्द सरस्वती अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय

प्रवेश प्रारम्भ

विद्यालय में दो प्रकार के पाठ्यक्रम हैं।

❑ **प्रथम पाठ्यक्रम** महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक हरियाणा से मान्यता प्राप्त है। विद्यालय में प्राच्य व्याकरण पाठ्यक्रम से अध्ययन कराया जाता है। प्रवेश प्राप्त करने के लिए कक्षा सात से उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। आठवी कक्षा में प्रवेश प्राप्त होगा। विद्यालय में पूर्व मध्यमा, उत्तर मध्यमा, शास्त्री एवं आचार्य पर्यन्त का अभ्यासक्रम है। जिसमें प्राच्य व्याकरण के उपरान्त वेद, दर्शन, उपनिषद और ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का अध्ययन कराया जाता है। यहाँ से उत्तीर्ण स्नातक बी. एड. अथवा अन्य परीक्षाएं देकर सरकारी अथवा सरकार मान्य संस्थाओं में सेवा प्राप्त कर सकते हैं।

❑ **द्वितीय पाठ्यक्रम** में उपदेशक कक्षाएं चलती हैं। जिसमें व्याकरण, वेद, दर्शन, उपनिषदादि के उपरान्त ऋषि दयानन्द के समस्त ग्रन्थ पढाये जाते हैं। भजन, प्रवचन तथा कर्मकांड विशेष रूप से सिखा कर आर्यसमाज के पुरोहित हेतु प्रशिक्षण दिया जाता है। यहाँ से उत्तीर्ण स्नातक आर्यसमाजों अथवा आर्य संस्थाओं में पुरोहित अथवा अन्य सेवा कार्य प्राप्त कर सकते हैं।

दोनों पाठ्यक्रमों में इच्छुक प्रवेशार्थी अपने निकटतम आर्यसमाज से परिचय-पत्र प्राप्त कर लावें तो ज्यादा उचित होगा। दोनों पाठ्यक्रमों में प्रवेश प्राप्त करने के लिए 20 मई 2013 से 15 जून 2013 तक आचार्य जी से पत्र-व्यवहार अथवा दूरभाष से जानकारी प्राप्त करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय

पो. ता. टंकारा, जि. राजकोट (गुजरात) पिन. 363650 फोनः- 02822-287756

आचार्य रामदेव शास्त्री 09913251448 **व्यवस्थापकः- रमेश चन्द्र मेहता** 09427001119

टंकारा ट्रस्ट को 51000 रूपये की राशि भेंट

आर्यसमाज मंदिर (पंजी.), बी ब्लॉक, जनकपुरी में प्रवचन करते हुए प्रख्यात वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने कहा कि आज व्यक्ति अभाव से नहीं अपितु दूसरे के प्रभाव से दुःखी है। कार्यक्रम का संयोजन, संचालन करते हुए प्रख्यात साहित्यकार डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया ने कहा कि मनुष्य जीवन का परमलक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति है और इसके लिए जीवन में सत्कर्म करना बहुत आवश्यक है। राजस्थान से पधारे डॉ. स्वामी आर्येश आनन्द सरस्वती जी ने कहा कि वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द का त्याग, निर्लोभता और सिद्धान्तवादिता हम सबके लिए अनुकरणीय है। श्री वशिष्ठमुनि आर्य जी ने अष्टांग योग की चर्चा करते हुए चर्मकाया को चरमकाया बना देने पर बल दिया। इस अवसर पर टंकारा के महामन्त्री श्री रामनाथ सहगल जी एवं डॉ. स्वामी आर्येश आनन्द सरस्वती जी का माल्यार्पण, प्रतीक चिन्ह एवं शालादि से सार्वजनिक

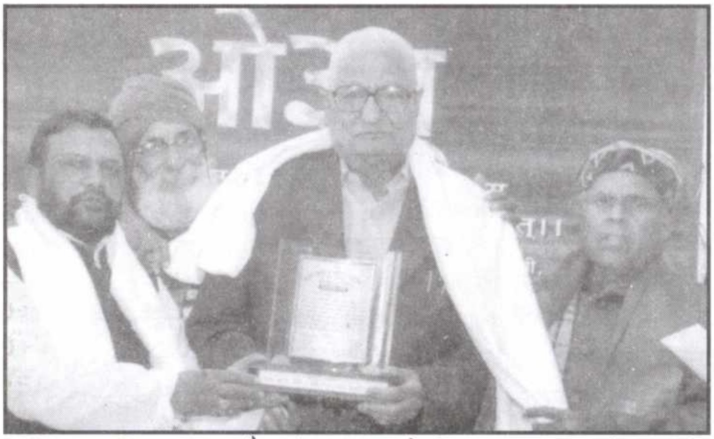

अभिनन्दन किया गया और टंकाराट्रस्ट के लिए 51 हजार की धनराशि भेंट की गई।

गुरुकुल हरिपुर द्वारा अन्न-वस्त्र वितरण

<u>गुरुकुल हरिपुर, जुनवानी जि. नुआपड़ा (ओडिशा)</u> महात्मा वानप्रस्थ श्री सत्यनारायण जी आर्य के आशीर्वाद से ओडिशा के बहुत ही पिछड़ा हुआ क्षेत्र फुलवाणी (कन्धमाल) जिला के नुआगां, राईकिया व फिरीगिया विकासखण्ड के विभिन्न 26 गांवों के अत्यन्त निर्धन 600 परिवारों को अन्न-वस्त्र वितरण किया गया। वितरण कार्यक्रम के साथ-साथ तीन मुख्य वितरण केन्द्रों पर यज्ञ प्रवचन का कार्यक्रम भी हुआ।

मानव कल्याण यज्ञ सम्पन्न

मानसरोवर कॉलोनी की सामाजिक संस्था **चेतना मंच** ने रामकृष्ण पार्क में **आर्यसमाज जयपुर (दक्षिण)** के सानिध्य में 'मानव कल्याण एवं प्रदूषण निवारक यज्ञ सम्पन्न कराया। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के प्रदेशाध्यक्ष यशपाल 'यश' ने अथर्ववेद के मन्त्रों से सुग्राह्य व्याख्या के साथ आहुतियाँ दिलवाई।

नन्द किशोर काम्बोज तथा उत्तम अग्रवाल दम्पत्ति होता बने तथा स्थानीय सैकड़ों निवासी भी आहुतियाँ अर्पित कर हर्षित हुए।

डी.ए.वी. का वैदिक चेतना शिविर

आर्य युवा समाज डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल बल्लभगढ़, हरियाणा के तत्वावधान में श्रीयुत् पूनम सूरी जी प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली की आशीर्वादमयी सत्प्रेरणा से बालक-बालिकाओं में स्वावलम्बन, आत्म विश्वास व्यवहार में कर्तव्यपरायणता, सदाचार, शिष्टाचार एवं अनुशासन के प्रति अभिप्रेरित करना तथा राष्ट्रीय निष्ठा की भावना, शारीरिक-मानसिक-आध्यात्मिक नैतिक-चारित्रिक सर्वागींण विकास व वैदिक नैतिक मानवीय मूल्यों से ओतप्रोत करने हेतु वैदिक मोहन आश्रम, हरिद्वार में जहां आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पाखण्ड खण्डिनी पताका लगाकर लोगों को ''आओ वेदों की ओर लौटें'' का पावन सन्देश दिया था। उस रमणीय अत्यन्त मनोहारी गंगा के तट पर निर्मित सुरम्य वातावरण में स्थित आश्रम में त्रिदिवसीय निःशुल्क वैदिक चेतना एवं चरित्र निर्माण शिविर लगाया गया। इस शिविर में कक्षा छठी से आठवीं तक लगभग 40 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

शिविर की दिनचर्या के अन्तर्गत प्रातः ध्यान, योग-प्राणायाम आदि का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया गया। प्रातः सायं पवित्र यज्ञ कराते हुए यज्ञ के महत्त्व एवं विधियों का ज्ञान कराया। इस शिविर में शिविरार्थियों को आर्य जगत् के उद्भट विद्वान महात्मा चैतन्य मुनि जी एवं माता सत्यप्रिय जी, हिमाचल प्रदेश ने अपना उद्बोधन देते हुए कहा कि वर्तमान भौतिकवादी चकाचौंध के युग में ऐसे शिविरों के आयोजन से जहां व्यक्तित्व का विकास होता है, वहीं दुर्गुण-दुर्व्यसनों से दूर रहकर सादा जीवन उच्च विचारों की भावना के पैदा होने से जीवन को नई दिशा व मार्गदर्शन मिलता है व स्वास्थ्य और आहार के प्रति सजग बनते हैं। शिविर के दौरान बच्चों को स्थानीय दर्शनीय ज्ञानवर्धक स्थानों का भ्रमण कराया गया।

आर्य साहित्यकार पुरस्कारों की घोषणा

गुगनराम सोसायटी बोहल, जिला भिवानी ने आर्य समाज में लेखन, प्रकाशन व सम्पादन को प्रगति देने के उद्देश्य से दो साहित्य पुरस्कारों के लिए प्रविष्टियाँ आमन्त्रित की थी। इस योजना के तहत आर्य समाज के अनेकों विद्वान लेखकों ने अपनी पुस्तकें भेजी थीं। सोसायटी के निर्णायक मण्डल ने श्री गुगनराम सिहाग साहित्य पुरस्कार के लिए डॉ. रमेश दत्त मिश्र के शोध प्रबंध 'महर्षि दयानन्द का दार्शनिक चिन्तन' को वर्ष 2012 के लिए, श्री वीरेन्द्र कुमार राजपूत की पुस्तक 'यजुर्वेद काव्यार्थ' को वर्ष 2011 के लिए व श्री लक्ष्मण कुमार शास्त्री की पुस्तक 'मृत्यु और पुर्नजन्म' को वर्ष 2007 के लिए चुना है।

श्रीमती गिना देवी साहित्य पुरस्कार के लिए श्री ताराचन्द आहुजा की पुस्तक 'दिव्य जीवन की ओर' को वर्ष 2012 के लिए, श्री ओमप्रकाश आर्य की पुस्तक 'आर्य समाजः एक परिचय' को वर्ष 2010 के लिए व श्री नाथुराम शर्मा की पुस्तक 'दिव्य नित्य कर्म विधि' को वर्ष 2002 के लिए चुना है। इन दोनों पुरस्कारों के तहत प्रत्येक लेखक को सोसायटी की तरफ से 1100-1100 रूपये की राशि व प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जायेगा।

इसके अतिरिक्त श्री कृपाल सिंह वर्मा की पुस्तक 'वैदिक विज्ञान के सिद्धांत' व आचार्य चैतन्य मुनि की पुस्तक 'राज्य व्यवस्था कैसी हो' को सोसायटी की तरफ से प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जायेगा।

रूड़की में अमर बलिदानों की जयन्ती पर आयोजन

1. दिनांक 6.3.2013 को श्री आर्य मुसाफिर पं. लेखराम की पुण्य तिथि पर उनके जीवन चरित्र व उनके द्वारा चलाया गया, हिन्दू रक्षा कार्यक्रम उनकी कार्यशैली पर गम्भीरता पूर्वक प्रकाश डाला गया तथा उनके निडर व निर्भीक, बहादुरी की प्रशंसा की गई।

2. दिनांक 7.3.2013 को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्म दिवस पर स्वास्तिक महायज्ञ किया गया। महान ऋषि के जीवन चरित्र जीवन दर्शन, महान कार्यों के विषय पर प्रकाश डाला गया।

3. दिनांक 19.3.2013 के मुनिवर पं. गुरुदत्त विद्यार्थी की पुण्य तिथि पर, उनके उच्च जीवन चक्र पर प्रकाश डाला गया। इनकी उच्च शिक्षा, मेधावी व प्रज्ञा बुद्धि को देखकर एवं इनके द्वारा लिखे विभिन्न साहित्य व ज्ञान से प्रभावित होकर महर्षि दयानन्द ने पं. गुरुदत्त विद्यार्थी से कहा, तुमसे मैं बहुत प्रसन्न हूँ।

4. दिनांक 23.3.2013 को अमर बलिदानों में सरदार भगत सिंह राजगुरू, सुखदेव का मुख्य स्थान है। इन्होंने देश के प्रति पूर्ण स्वराज प्राप्ति पर अपने जीवन को देश की आजादी प्राप्ति हेतु हंस-हंस कर जीवन समर्पित कर दिया। आर्य समाज रामनगर रूड़की हरिद्वार इन वीरों को को बार-बार नमन करता है तथा सदैव स्मरण करता रहेगा।

स्वस्ति महायज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज मॉडल टाऊन, पानीपत के तत्वावधान में स्वस्ति महायज्ञ का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया, वेद प्रवक्ता आचार्य भरत लाल जी शास्त्री ने कहा यदि हम अपने जीवन का उत्थान चाहते हैं तो हमें वेद मार्ग पर चलना चाहिए। आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सुखपाल आर्य जी ने देश भक्ति और आर्य समाज के बारे में क्रान्तिकारी भजनों द्वारा आर्यजनों को मन्त्रमुग्ध कर दिया। आर्य समाज मॉडल टाऊन पानीपत के कार्यकर्ता प्रधान श्री चमनलाल जी आर्य ने बलबीर पाल शाह जी का इस कार्यक्रम में आने पर धन्यवाद किया तथा सभी पदाधिकारियों ने उन्हें शाल औढ़कर तथा तथा फूल मालाओं द्वारा उन्हें सम्मानित किया।

नवसस्येष्टि पर्व सम्पन्न

आर्य समाज रेलवे कॉलोनी कोटा द्वारा तीन दिवसीय बसन्ती नवसस्येष्टि पर्व होलिकोत्सव समारोह पूर्वक मनाया गया।

कार्यक्रम में प. बृद्धिचन्द शास्त्री के पौरहित्य में बासन्ती नवसस्येष्टि यज्ञ का आयोजन आर्य समाज मन्दिर रेलवे कॉलोनी के प्रांगण में किया गया। यज्ञ में नये अनाज की भुनी हुई बालियों द्वारा विशेष आहुतियाँ प्रदान की गईं। यज्ञ के उपरान्त सत्संग का आयोजन किया गया।

आर्य समाज का स्थापना दिवस मनाया

आर्य समाज तिलक नगर, कोटा की ओर से चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अवसर पर आर्य समाज का स्थापना दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ पं बृद्धिचन्द शास्त्री के पौरोहित्य में अग्निहोत्रपूर्वक देवयज्ञ से हुआ। इस अवसर पर भारतीय नवसंवत्सर 2070 प्रारंभ होने के उपलक्ष्य में विशेष आहुतियां प्रदान की गई। यज्ञ के पश्चात् सत्संग का आयोजन भी किया गया।

बोधोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज नंगल टॉउनशिप में शिवरात्रि बोध उत्सव एवम् महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्म दिवस का कार्यक्रम बड़े ही हर्षोल्लास एवम् श्रद्धापूर्वक हवन द्वारा प्रारम्भ करके आयोजित किया गया। यज्ञपूर्ण होने बाद सत्संग के आरम्भ में श्रीमान दीवान चन्द्र शर्मा जी द्वारा भजन प्रस्तुत किया गया। भजनों के बाद आदरणीय आसकरण दास सरदाना जी द्वारा महर्षि दयानन्द जी के जन्म दिवस एवम् ऋषि बोधत्सव के उपलक्ष्य में प्रवचनों के माध्यम से आर्यजनों को बड़े सरल भाषा में प्रवचन करके लाभान्वित किया।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज शाहपुरा के तत्वावधान में संकलित श्रीमद्दयानन्द महिला शिक्षण केन्द्र का वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ।

समारोह के मुख्य अतिथि शिक्षाविद् श्री भंवर लाल शर्मा ने विद्यालय की गतिविधियों का बारीकी से अवलोकन करते हुए इसके उत्तरोतर उन्नति की कामना की। समारोह में विशिष्ट अतिथि आर्यसमाज के मन्त्री श्री सत्यनारायण तेलम्बिया व प्रधान श्री कन्हैया लाल आर्य तथा केन्द्र के मन्त्री श्री हीरा लाल आर्य ने भी अपने सद्विचार व्यक्त किए।

आर्य समाज स्थापना दिवस आयोजित

आर्य केन्द्रीय सभा पानीपत के तत्वावधान में आर्यसमाज स्थापना दिवस आर्य समाज माडल टाऊन में समारोहपूर्वक मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री ओमप्रकाश जी डावर, प्रधान आर्य समाज मॉडल टाऊन ने की। इस शुभ अवसर पर मुख्यातिथि कर्नल एस.के. ओबराय तथा विशिष्ट अतिथि श्री सुरेश आहूजा थे। ध्वजारोहण श्री दिलबाग जी ने अपने कर-कमलों द्वारा की। यज्ञ ब्रह्मा श्री ललित शास्त्री जी अपने वैदिक मंत्रोच्चारण द्वारा विधि पूर्वक यज्ञ सम्पन्न कराया। सभी अतिथि महानुभावों का दुशालें ओढ़ाकर तथा फूल मालाओं द्वारा सम्मानित किया गया।

चुनाव समाचार

आर्य समाज सज्जन नगर, उदयपुर

प्रधान- श्री हुकम चंद शास्त्री **मन्त्री**- श्री सौरभ देव आर्य

कोषाध्यक्ष- श्री अशोक उदावत

मन्त्र

आदित्सन्तं दापयति प्रजानन्। 9.24

विद्वान् अदाता को दान देने के लिए प्रेरित करता है।

अस्मान् रायो मघवानः सचन्ताम्। 2.90

धनवान् हमें धन दें।

प्रवेश प्रारम्भ

गुरुकुल शुक्रताल

गुरुकुल महाविद्यालय गंगा के पावन तट पर ऋषि महर्षियों की तपस्थली, प्रकृति के सुरम्य वातावरण में स्थित है। यहां संस्कृत भाषा के साथ-2 आधुनिक विषयों जैसे अंग्रेजी, गणित, इतिहास, भूगोल एवं अर्थशास्त्र आदि विषयों का अध्यापन सुयोग्य अध्यापकों के द्वारा कराया जाता है। कम्प्यूटर शिक्षा का उत्तम ज्ञान कराया जाता है। छात्रों को उत्तम संस्कार वाले बनाने हेतु प्रतिदिन प्रातः एवं सायं सन्ध्या हवन एवं यौगिक क्रियाएं करायी जाती है। छात्रों को सादा एवं पौष्टिक भोजन खिलाया जाता है। नये सत्र के प्रवेश आरम्भ हो रहे है। यहां पर मध्यमा स्तर (इन्टरमीडिएट) की परीक्षाएं उत्तर प्रदेश माध्यमिक संस्कृत शिक्षा परिषद् लखनऊ तथा महाविद्यालय स्तर का पाठ्यक्रय 'सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी द्वारा संचालित है। संस्था में प्रवेश के लिए छात्र का 5वीं उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। कृपया अपने होनहार बच्चों को संस्कार युक्त शिक्षा दिलाने हेतु दूरभाष पर वार्ता करके प्रवेश दिलायें। प्रवेश नियम डाक से अथवा व्यक्तिगत रूप से प्राप्त कर सकते हैं। सम्पर्क- गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय, शुक्रताल, जिला मुजफ्फनगर, पिन-251316, दूरभाष-01396-228357, प्रेमशंकर मिश्र, प्रधानाचार्य (09411481624)

गुरुकुल खेड़ा-खुर्द

दिल्ली की प्रसिद्ध संस्था व महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय रोहतक से सम्बद्ध गुरुकुल खेड़ा-खुद, दिल्ली में प्रवेश प्रारम्भ हो गया है। आर्ष पाठ विधि के साथ-साथ प्राथमिक कक्षा से ही आधुनिक विषय अंग्रेजी, साइन्स व कम्प्यूटर की शिक्षा दी जाती है। आचार्य सुधांशु (प्राचार्य)- मो. 9350538952

देखा ना कोई ऐसा ऋषि जन्मस्थान जैसा

प्रभु कृपा से हम सभी आनन्दित हैं और प्रार्थना करते हैं कि आप दोनों को प्रभु ऐसी शक्ती प्रदान करे जिससे जन्मस्थली की निरंतर प्रगति होती रहे और इसे विश्व दर्शनीय बनाने तक आप उत्साहित हो कार्य करते रहें। बहुत वर्षो से जन्मस्थली को देखने की इच्छा थी। इस वर्ष अजय जी ने प्रोत्साहित किया और हम वहाँ उपस्थित हुए।

40-45 वर्ष पूर्व स्वामी दीक्षानन्दजी के साथ जब जन्मस्थली गया था तो वहां सब कुछ टैंटों में ही होता था। लेकिन अब सब कुछ बदल चुका है। टंकारा ऋषिजन्म भूमि ग्राम पर महर्षि दयानन्द द्वार जो टंकारा ग्राम की शोभा बन मूलशकर की याद ताजा करा रहा है एवम् दर्शनीय विशाल यज्ञशाला को देख कर, वहाँ हजारों की संख्या में श्रद्धालु प्रेम भाव से मंत्रों का उच्चारण कर रहे थे दिल प्रसन्नता से हिलोरे लेने लगा। 10 तारीख की रात्रि को कई सहस्त्र लोगों को सभा में उपस्थित देखा तो जंगल में मंगल का अर्थ समझ आ गया ऐसी आलौकिक सभा में जब अजय जी ने प्रभा सेठी एवम् मुझे मंच पर बुलाया और शालों द्वारा सम्मान किया अपने आप में विशिष्टता का अनुभव कर प्रफुल्लित हो उठा और यकीन नहीं हुआ कि इस विशेषता के साथ टंकारा जन्मस्थली के दर्शन होंगे। अपार भीड़ शोभा यात्रा में उमड़ पड़ी समस्त टंकारा मानो शोभायात्रा देखने घर से बाहर निकल आई हो।

श्री रामनाथ सहगलजी को आर्य समाज के सशक्त प्रहरी के रुप में सफलतापूर्वक कार्य करते हुए खूब देखा और आशीर्वाद भी प्राप्त किया लेकिन अजय जी को इतने बड़े मंच से जब देश एवम् विदेश से हजारों हजारों की संख्या में लोगों से भरपूर उपस्थिति में मंच का संचालन जिस आत्मविश्वास से करते देखा तो लगा की अजय जी को पिता द्वारा प्रशिक्षण जो मिला व अभूतपूर्व है।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि इस जन्मस्थान की ख्याति पूरे विश्व में फैले और हम आर्य गर्व से मस्तिष्क उठाकर हम कह सकें कि "आओ देखो हमारे ऋषि का जन्मस्थान जिसने तीर्थ स्थान का रूप ग्रहण कर लिया है।" **-राकेश भटनागर**

आर्य समाज कालकाजी, नई दिल्ली

ध्यान क्यों नहीं लगता?

कुछ सज्जनों का कहना है कि सन्ध्या (ईश्वर भक्ति) करते समय ध्यान नहीं लगता। ध्यान क्यों नहीं लगता इसका कारण है धारणा दृढ़ नहीं है। ध्यान लगाने से पहले धारणा बनानी पड़ती है। यदि धारणा पक्की नहीं है तब ध्यान कमी नहीं लगेगा। ध्यान लगाने के लिए धारणा को अटूट बनाओ। धारणा बनती है मन के द्वारा और मन है चंचल। फिर पहले मन को वश में करो। मन बुद्धि के अधीन है। यदि बुद्धि में ही मलिनता भरी हुई है तब मन मनमानी करने में स्वतन्त्र हो जाता है। इन्द्रियों के बहकावे में आकार संयम खो देता है। धारणा धरी रह जाती है। फिर ध्यान लगने का प्रश्न ही नहीं होता।

प्रिय बन्धुओ! पहले बुद्धि को निर्मल करो। बुद्धि की निर्मलता के लिए शुद्ध सात्विक आहार ग्रहण करो। तामसिक भोजन से बचो, जो बुद्धि भ्रष्ट करता है। विद्वानों का सत्संग करो। आर्ष पुस्तकों का स्वाध्याय करो। मन को वश में करने के लिए प्राणायाम द्वारा अभ्यास करो। मन में धारणा बनाओ कि ईश्वर उपसना करनी आवश्यक है। धारणा नमते ही ध्यान लगना सम्भव हो जायेगा। जैसे प्यार से व्यक्ति की धारणा पानी प्राप्त करने की ओर ध्यान लगा देती है ऐसे ईश्वर भक्ति की धारणा बनाने में ध्यान लग जाता है। देवराज आर्य मित्र, डब्ल्यू जेड-428, हरि नगर, नई दिल्ली-64

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलो में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्त्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहां प्रतिवर्ष कई वर्षो से पधार रहे है यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते है कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मियता बनी रहे। इस वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया है कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष 1000/- रूपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते है। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अधिक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि घर से जुड़ सकते है। इस वर्ष 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक

सत्यानन्द मुंजाल	**शिवराजवती आर्या**	**रामनाथ सहगल**
(मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)	उप-प्रधाना	(मन्त्री)

स्वाभिमान

॥ ओ३म् ॥

स्वावलम्बन

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल

के तत्वावधान में

राष्ट्रीय शिक्षिका प्रशिक्षण शिविर

स्वामी देवव्रत जी के आशीर्वाद, मार्गदर्शन व सानिध्य में

दिनांक 16 जून से 23 जून 2013

स्थान- गुरुकुल कुरुक्षेत्र (युनिवर्सिटी के तीसरे गेट के पास) आयोजित हो रहा है।

"एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि ज्योतिर्वसाना समना पुरस्तात्" (ऋ. 1/124/3)

विदुषी नारी सदा श्रेष्ठ मार्ग पर चलती है और कभी दिशाओं या मर्यादाओं का उल्लंघन नहीं करती। ऋषि के शब्दों को क्रियान्वित करने के लिए दृढ़ संकल्प से जो स्त्रियां विदुषी होकर सत्य धर्म और उत्तम स्वभाव को स्वीकार करके मेघों के सदृश्य सुखों की दृष्टि करती हैं। वे बड़े सुखों को प्राप्त होती हैं।

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी कन्याओं में शारीरिक, आत्मिक, नैतिक बल एवं वैदिक सिद्धान्तों, संस्कारो का प्रशिक्षण देकर उन्हें राष्ट्र, समाज व परिवार के निर्माण में अहम् भूमिका निभाने हेतु सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल यह शिविर आयोजित कर रहा है।

इस शिविर के माध्यम से कन्याओं में शारीरिक एवं बौद्धिक विकास, राष्ट्रीय चेतना, अनुशासित जीवन, आत्मरक्षण, शस्त्र प्रशिक्षण, संगीत एवं वैदिक संस्कृति के प्रति निष्ठा उत्पन्न कर शिक्षिका बनाना ही हमारा मुख्य उद्देश्य है। सभी प्रान्तीय सभाओं, जिला समाजों व गुरुकुलों में जहां वीरांगना दल की शाखायें लगती हैं वे अपनी चुनी हुई वीरांगनाओं को इस शिविर में भेजें जिन्होंने पहले भी 2 या 3 शिविर में प्रशिक्षण लिया हो।

उद्घाटन : 16 जून, रविवार 2013 प्रातः 10 से 1 बजे

समापन : 23 जून, रविवार 2013 प्रातः 10 से 1 बजे

- ★ 15 जून की शाम तक जरूर पहुँच जायें।
- ★ जिन्होंने पहले भी 2 या 3 शिविर किये हों।
- ★ शिविर का गणवेश २ जोड़ी सफेद सलवार-कमीज, केसरिया दुपट्टा, सफेद पी.टी. शूज़, सफेद मौजे व पहनने के उचित कपड़े साथ लायें।
- ★ सभी शिविरार्थी अपना नामांकन 6 जून तक करा लें।
- ★ आयु कम से कम 15 वर्ष व शैक्षणिक योग्यता नौवी पास
- ★ ऋतु अनुसार अपना बिस्तर, टार्च, लाठी, मग, साबुन साथ लायें।
- ★ शिविरार्थी कोई भी कीमती वस्तु व अधिक पैसे साथ न लायें।
- ★ शिविर शुल्क 350 रूपये प्रति शिविरार्थी होगा। पाठ्य पुस्तकें शिविर की तरफ से दी जायेगीं।

इस शिविर में स्वामी देवव्रत जी (प्रधान संचालक आर्य वीर दल) व अन्य योग्य शिक्षकों के निर्देशन में प्रशिक्षण दिया जायेगा।

-: संयोजक :-

प्रधान संचालिका
साध्वी डॉ. उत्तमा यति (उज्जवल)
09672286863

संचालिका
मृदुला चौहान
09810702762

कोषाध्यक्षा
विमला मल्लिक
09810274318

शिविर संरक्षक
स्वामी देवव्रत जी
प्रधान संचालक आर्यवीर दल (मो. 09868620631)

स्वागताध्यक्ष
आचार्य देवव्रत जी
गुरुकुल कुरुक्षेत्र (मो. 09416038142)

संस्कृति

नोट:- बस से आने वाले पिपली उतरें, वहाँ से युनिवर्सिटी के तीसरे गेट की बस पकड़ें या ऑटो से भी आ सकते हैं।

सेवा

सुभाषित

- ❑ शब्दों की अपेक्षा कर्म अधिक अच्छा उपदेश देते है।
- ❑ अपना सुख ढूंढने के लिए दूसरों को सुखी रखो।
- ❑ गुण सब स्थानों पर अपना आदर करा लेता है।

Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2012-13-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2012-14
Posted at Patrika Channel R.M.S. on 1/2-05-2013
R.N.I. No 68339/98

मुद्रक व प्रकाशक–**रामनाथ सहगल** द्वारा **मयंक प्रिंटर्स,** 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-5 दूरभाष : 41548504 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : **अजय**